॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

फरवरी, 2014 वर्ष 17, अंक 2 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये
विक्रमी सम्वत् 2070 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 24

शिवरात्रि का दिव्य संदेश

धन्य है वह ग्राम जो कि दीप है गुजरात का, धन्य है वह देव जो सूर्य है प्रातः का।
और वह महान् है, शिवरात्रि की पावन तली, सत्य बोध हो उठा कि खिल व मिल गयी कली।

कितनी ही शिवरात्रियाँ आई और चली गई, न जाने कितने पुरातन काल से लोग शिवरात्रि (कल्याणकारी रात्रि) के दिन उपवास कर रात्रि को बड़ी श्रद्धा व निष्ठा से मन्दिर में जाकर सारी रात जागरण करके शिव दर्शन की प्रतिमा करते करते थक गये होंगे, इनमें से कितनों को वास्तव में यह रात्रि कल्याणकारी सिद्ध हुई। यह सब बात तो जिज्ञासुओं की खोज का विषय है, परन्तु इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है, कि आज से लगभग 187 वर्ष पूर्व बालक मूल के ज्ञान चक्षु तो इस रात्रि के उस समय ही खुल गये थे, जब उसने शिवलिंग पर भक्तों द्वारा चढ़ाए चावल मिष्ठान्न आदि को खाते और अठखेलियां करते चूहा देखा। इस प्रकार वह जगा और दूसरों को भी जगा गया। यह एक साधारण सी घटना थी, जिसने बालक मूलशंकर के मन में भारी क्रांति उत्पन्न कर दी और समय बीतने पर सारे विश्व में हलचल पैदा कर दी, जिससे प्रभावित होकर लोग अपने-अपने धर्मशास्त्रों की छानबीन करने लगे। ऋषि चाहते तो सारा जीवन समाधि का आनन्द लूट सकते थे, परन्तु ऋषि को यह अभीष्ट न था, तत्कालीन देश की दयनीय दशा ने दयानन्द के हृदय में एक हूक, एक भारी तड़प पैदा कर दी, जिससे वह बड़ा बेचैन रहने लगे और दिन-रात देश की दुर्दशा के चिन्तन में करवट लेते-लेते काटने लगे। इसके फलस्वरूप एक दिन वह समाधि के शाश्वत आनन्द को छोड़ देश के उद्धार व सामाजिक सुधार के विकट कार्य क्षेत्र में कूद पड़े।

ऋषि के प्रादुर्भाव से पूर्व देश एक विकट परिस्थिति में ग्रसित था। क्या राजनैतिक, क्या धार्मिक, क्या सामाजिक और क्या आर्थिक, सभी दृष्टियों से राष्ट्र का महापतन हो रहा था। चहुँ ओर निराशा अकर्मण्यता द्वेष, स्वार्थ विघटन, नास्तिकता और भोग विलास के बादल छाये थे। लोग पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में अपने प्राचीन सम्भ्यता और संस्कृति को भूल बैठे थे। नर बलि, पशुबलि, अछूतों पर अमानुषिक अत्याचारों का बाजार गर्म था, विधवाओं और अबलाओं के करूण के करूण क्रन्दन कानों को छोड़ते थे। अपने पूर्वजों के प्रति किसी प्रकार की कोई निष्ठा शेष नहीं रह गई थी। रूढ़ियों में ग्रस्त देश घोर संकट में पड़ा था। सन् 1857 के सैनिक विद्रोह की असफलता के कारण विदेशी शासकों जनता में बड़ा आतंक पैदा कर रखा था, जिस कारण कोई भी सामाजिक सुधार आदि के कार्य करने की हिम्मत नहीं कर सकता था। दासता की बैड़ियों में जकड़ा देश अपना सर्वस्व खो बैठा था। ऐसी भयंकर स्थिति में दयानन्द जी अपनी समाधि के आनन्द को लातमार कर समाज सेवा के कार्यो में लग गये। उस महान् त्यागी तपस्वी ने थोड़े ही काल में देश की काया पलट दी। लोगों का अपने पूर्वजों और अपनी गौरवमयी प्राचीन सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित हुआ और राष्ट्र में महान् जागृति और चेतना आ गई। युग प्रवर्तक योगिराज महर्षि दयानन्द जी ही थे। जिन्होंने बड़ी निर्भीकता से बताया कि विदेशी राज्य चाहें कितना ही अच्छा क्यों न हो, परन्तु स्वदेशी राज्य से बढ़कर अच्छा नहीं हो सकता। इन सब कुरीतियों और रूढ़िवाद के झाड़ झुण्ड का उन्मूलन करने में ऋषि को सफलता तो मिली, परन्तु उनको यह बहुत महंगी पड़ी। इस काम में ऋषि आंधि और तूफान की तरह आगे-आगे बढ़ते गये। जिस दिशा में भी पग उठाया और जिस ओर मुंह मोड़ा सफलता देवी मानो हाथ बांध अगवानी के बास्ते खड़ी हो। परन्तु स्वार्थी लोगों ने ऋषि के पवित्र मन्तव्य को न समझकर उसको हर प्रकार से अपमानित करने में कुछ भी कसर नहीं छोड़ा। गद्दियों के प्रलोभन कर्णसिंह की चमकती तलवार, सांपों के प्रहार, गालियों की बौछार ऋषि को अपने कर्त्तव्य मार्ग से किञ्चित भी न डगमगा सके। स्वार्थी समाज द्रोही, लम्पट पोपों की धमकियों और विपक्षी मठाधीशों द्वारा षड्यन्त्र ऋषिवर के काम में बाधा न डाल सके। इस कार्य में बाधा डालने के लिए लोगों ने अनेक बार विषपान भी कराया पर ऋषि अपने कार्य पर अडिग रहे तथा कभी भी अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए क्योंकि किसी के वचन में कहा है कि, **''न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः''** अर्थात धीर बुद्धिमान व्यक्ति अपने सत्यन्याय मार्ग से कभी विचलित नहीं होते हैं। **(शेष पृष्ठ 22 पर)**

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

श्री पूनम सूरी पुनः तृतीय बार डी.ए.वी. के प्रधान निर्वाचित हुए

डी.ए.वी. की वार्षिक साधारण सभा से पूर्व यज्ञ करते श्री पूनम सूरी जी एवं साथ में श्री राधेश्याम शर्मा, डॉ. एस.के. सामा एवम् श्री रामनाथ सहगल। द्वितीय चित्र में सभा को सम्बोधित करते हुए श्री पूनम सूरी जी, श्री राधेश्याम शर्मा एवम् डा. एस. के. सामा

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति की 5 जनवरी, 2014 को आयोजित विशेष बैठक में श्री पूनम सूरी जी को तीसरी बार निर्विरोध रूप से सर्वसम्मति द्वारा वर्ष 2014 के लिए प्रधान चुन लिया गया। विचारणीय विषयों में समिति के चुनाव का विषय आते हुए सदस्यों से खचाखच भरे सभागार में विशेष उत्साह देखने को मिला। पदाधिकारियों के चुनाव के लिए बिग्रेडियर ए.के. अदलखा और डॉ. शि पेशिन को सर्वसम्मति से निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया गया और निवर्तमान पदाधिकारियों के द्वारा अपने स्थान रिक्त कर दिये गये।

प्रधान पद के लिए नाम आमंत्रित किए जाने पर अत्यंत तत्परता दिखाते हुए श्री अजय सहगल ने श्री पूनम सूरी जी का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तावित किया जिसका अनुमोदन श्री सत्यपाल जी के साथ सारे सदस्यों ने हाथ ऊपर उठाकर किया। किसी दूसरे नाम का प्रस्ताव न आने पर श्री सूरी को सर्वसम्मति से प्रबंधककर्त्री समिति का प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इसके साथ ही उप-प्रधान पद के लिए डॉ. एस.के. सामा, महामन्त्री पद के लिए श्री आर.एस.शर्मा, सैक्रेटरी पद के लिए श्री रवीन्द्र कुमार और कोषाध्यक्ष पद के लिए श्री महेश चोपड़ा जी का नाम सर्वसम्मति से निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। समिति के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अतिरिक्त पदाधिकारी उप प्रधान, मन्त्री तथा मानद कोषाध्यक्ष निर्वाचित किए गए।

सदस्यों द्वारा व्यक्त विश्वास का आभार प्रकट करते हुए मान्य प्रधानजी ने अत्यंत विनम्रता से पद को स्वीकार करते हुए डी.ए.वी. को उन्नति के नवीन शिखरों तक ले जाने का संकल्प दोहराया और कहा कि वे डी.ए.वी. के कार्य को पूर्ण सेवा-भाव से करते रहेंगे 'डी.ए.वी., इस अभिव्यक्ति के प्रथम पद के रूप में दयानन्द का नाम मुझे निरंतर प्रेरित करता है कि मैं उनके अधूरे कामों को पूरा करने का भरसक प्रयत्न करूँ और दूसरे कारण के रूप में मैं समझता हूँ कि प्रभु ने माँगने पर या बिना माँगे जो कुछ भी मेरी झोली में डाला है, मैं उसके लिए प्रभु का धन्यवाद करूँ, और तीसरा कारण यह है कि डी.ए.वी. संस्था की सेवा करते हुए अपने भीतर की बुराइयों, अशुद्धियों और कमियों को दूर करके अपना अंत:करण शुद्ध करूँ और प्रभु प्रसाद पाने का अधिकारी बनूँ। उन्होंने नये बने सदस्यों और चुने हुए पदाधिकारियों का भी आह्वान किया कि वे इन तीनों बिन्दुओं पर निरंतर चिंतन करते रहें।

हम सब मिलकर अपने लिए एक आत्मिक एजेण्डा निर्धारित करें। इसके लिए उन्होंने समस्त सभासदों से निवेदन किया कि वर्ष 2014 में विनम्रता को अपने व्यक्तित्व का अविभाज्य अंग बनाएं और इसके लिए 'गायत्री मन्त्र' को अपने जीवन में धारण करने का प्रयत्न करें। वेद, उपनिषद् और दूसरे शास्त्रों से उद्धरण देकर मान्य प्रधानजी ने गायत्री की महिमा का गान किया और गायत्री जप से प्राप्त होने वाली आयु, स्वास्थ्य, संतति, पशुधन, कीर्ति, धन और ब्रह्मवर्चस के प्राप्त होने की चर्चा की। मान्य प्रधान जी ने ज्ञान, कर्म और उपासना से परिपूर्ण इस महामन्त्र को दिन में एक बार कम-से कम पच्चीस मिनट तक अर्थ-सहित जपने का आध्यात्मिक आह्वान किया।

निर्वाचन के उपरान्त डी.ए.वी. की अन्तरंग सभा के बृहत् चित्र का एक भाग (स्थानाभाव के कारण पूर्ण चित्र प्रकाशित न कर पाने का हमें खेद हैं)

ऋषि जन्म भूमि से सन्देश/प्रेरणा

किसी स्थान का महत्व उसके भौगोलिक आधार पर ऐतिहासिक आधार पर अथवा किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित होने के कारण होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिन-जिन स्थानों पर ऐतिहासिक घटनायें घटीं, वह आज भी उस घटना के कारण प्रसिद्ध हैं कुरुक्षेत्र, पानीपत, मेरठ, जलियांवाला बाग आदि कुछ ऐसे उदाहरण हैं। इसी प्रकार भौगोलिक स्थिति होने के कारण भी किसी स्थान का महत्व हो जाता है जैसे हिमालय स्थित नेपाल और पहाड़ी इलाकों में स्थित शहर शिमला, देहरादून मंसूरी इत्यादि। किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित होने के कारण पोरबन्दर, साबरमती आश्रम, आनन्द भवन इलाहाबाद, द्वारका, मथुरा गुरु विरजानन्द स्थली होने के कारण, अयोध्या राम जन्म भूमि होने के कारण, करतारपुर गुरु विरजानन्द गुरुकुल होने के कारण, अजमेर महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, उदयपुर महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश लिखे जाने के कारण और टंकारा स्वामी दयानन्द जी का जन्म स्थान होने के कारण।

मैं जिस विशेष कारण से पाठकों को ऋषि जन्म भूमि की ओर आकर्षित करना चाह रहा हूं। उसके पीछे कुछ विशेष कारण हैं। ऋषि जन्म भूमि का अधिकार श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के अधीन है और कुछ लोगों का यह कहना कि स्वामी दयानन्द ने अपना स्मारक बनाने को मना ही लिखी है फिर भी टंकारा ट्रस्ट में स्मारक नाम क्यों है।

मैं आर्य जनता को सूचित कर देना चाहता हूँ कि ट्रस्ट का ऋषि के स्मारक अथवा समाधिनुमा स्थान अथवा पूजा स्थल बनाने का अभिप्राय नहीं है। स्थान का महत्व जैसा कि मैंने उपरोक्त पंक्तियों में कहा है कि किसी व्यक्ति विशेष के कारण उस स्थान का महत्व बढ़ जाता है। टंकारा का महत्व इसीलिए हुआ कि वहां भारत रत्न स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ है। जिस प्रकार महत्व के स्थान पर उस व्यक्ति विशेष की स्मृति को बनाये रखने के लिए कुछ गतिविधियाँ, कुछ भवन अथवा कुछ आकृतियां लोगों को आकर्षित करने के लिए बनाई जाती हैं तो अन्य किस धर्म में इसे स्मारक कहते होंगे, परन्तु वैदिक धर्म में इसे स्मारक नहीं कहा जा सकता। लाहौर में आर्य समाज अनारकली में स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण के उपरान्त उनकी स्मृति को बनाये रखने के लिए डी.ए.वी. जैसी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की गई। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश उदयपुर में लिखा, उस स्थान को आर्यो ने अपने अधिकार में ले भव्य भवन बनवाया। इसी प्रकार जहां स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण हुआ था, उस भिनय कोठी का अधिकार भी आर्यो ने अपने अधिकार में लिया। यदि वह सब स्थान स्मारक नहीं है तो जन्म भूमि पर देव दयानन्द की स्मृति को बनाये रखने के लिए किए गए कार्य भी स्मारक नहीं है। मैं इस चर्चा को यहीं समाप्त करना चाहता हूं।

जिस दूसरी बात की ओर मैं ऋषि भक्तों, वैदिक धर्म के अनुयायियों, देव दयानन्द के दीवानों और अपने आपको आर्य कहने वालों को आकर्षित करना चाहता हूँ कि वह ऋषि की जन्म भूमि के प्रति श्रद्धा बनायें। मुझे यह कहने में कोई आपत्ति नहीं कि जो श्रद्धाभाव ऋषि जन्म भूमि के प्रति हम सबको होना चाहिए, वह अभी तक हम लोगों के अन्दर नहीं है। केवल मात्र कुछ दीवाने उस स्थान को विश्वदर्शनीय एवं विश्व के मानचित्र पर उजागर करने हेतु दिन रात तत्पर हैं। इस लेख को पढ़ने वाला हर व्यक्ति अपने आप में अवलोकन करे कि क्या वह उन दीवानों में से है अथवा नहीं। क्या उसका सहयोग ऋषि जन्म भूमि के प्रकल्पों में अभी तक हुआ है या नहीं। यदि ऐसा कुछ नहीं है तो क्या हमें अपने आपको उस दयानन्द का शिष्य कहलाने का अधिकार है? क्या हमें आर्य कहलाने का अधिकार है। पूरे विश्व में आर्य समाजों का निर्माण हो रहा है, हर्ष का विषय है। डी.ए.वी. स्कूलों एवं गुरुकुलों की स्थापना दिन प्रतिदिन हो रही है, यह हर्ष का विषय है। वैदिक साहित्य का प्रकाशन एवं वेद भाष्यों का प्रकाशन हो रहा है यह भी हर्ष का विषय है और न जाने ऐसी कितनी ही गतिविधियां उस देव दयानन्द का प्रेरणा स्रोत मानते हुए की जा रही हैं। लेकिन खेद का विषय है कि देव दयानन्द की जन्म भूमि को विश्वदर्शनीय बनाने हेतु बार-बार दान के सहयोग की अपील की जा रही है। यह तो हम आर्यों का दायित्व/कर्त्तव्य होना चाहिए कि केवल सूचना मात्र मिलने पर ही तन, मन, धन से सहयोग हेतु अपने आपको समर्पित कर देना चाहिए। मैं यहां बता देना चाहता हूं कि ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने तन-मन-धन तीनों स्रोत से इस कार्य हेतु सहयोग दिया और दे रहे हैं। क्या आप उनमें से एक हैं, इसका विवेचन करने की आवश्यकता है। यदि आपने अभी तक अपना सहयोग अंकित नहीं किया है तो अवश्य करें।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में 26, 27, 28 फरवरी 2014 को मनाये जाने वाले ऋषि बोधोत्सव में परिवार सहित टंकारा पधारे और वहां पर हो रहे कार्यों का निरीक्षण करें और अपने सुझाव लिखित रूप में देवें और किस प्रकार का सहयोग आप दे सकते हैं इसकी भी सूचना अवश्य देवें। आप ऋषि जन्मभूमि पर अपने सामर्थ के अनुसार इस प्रकार सहयोग कर सकते हैं - आप सेवानिवृत अध्यापक हैं तो विज्ञान, गणित, संस्कृत व्याकरण आदि विषयों का अध्यापन कार्य टंकारा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों हेतु कर सकते हैं। कच्छ की गर्मी और हरा चारा न होने के कारण गायों का दूध शीघ्र सुख अथवा कम हो जाता है। गौदान कर ब्रह्मचारियों के दूध हेतु सहयोग कर सकते हैं। ❑ एक और रुग्णवाहन (एंबुलेंस) की आवश्यकता है। ❑ ब्रह्मचारियों के कम्प्यूटर केन्द्र हेतु 15 नये कम्प्यूटर की आवश्यकता है। ❑ महिला सिलाई केन्द्र के लिए कपड़ा देकर सहयोग एवम् कुछ विशेष कढ़ाई के मशीनों की आवश्यकता है। ❑ निर्माण कार्य में आर्थिक सहयोग की आवश्कता है। ❑ जन्मस्थान के आस-पास के मकान और दुकानें जो खाली पड़ी हैं खरीदनी है जिससे जन्मस्थान की भव्यता बने और उसपर कार्य आगे बढ़े (आर्थिक सहयोग की आवश्यकता)। ❑ भोजनालय में बड़े पतीले और अन्य बड़े पात्र की आवश्यकता, भोजनालय के नवीनीकरण एवम् फाइबर सीट से छत ढाकना आदि कार्यो में सहयोग की आवश्यकता है।

ऐ मेरे आर्य बहनों और भाईयों- विश्व में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो किसी विशेष कारण से टंकारा आने हेतु रूक जाए। मुश्किलें आती हैं परन्तु फिर भी लोग आते हैं और कार्यों में सहयोग दें या न दें, फिर भी उस प्रभु की कृपा से कार्य पूर्ण हो जाते हैं। जन्म भूमि विश्वदर्शनीय तो अवश्य ही बनेगी और जो समय सीमा बांधी है, उस तक परमपिता परमात्मा की कृपा से पूरी हो जायेगी, परन्तु संयोग की बात है कि ऋषि के ऋण से उऋण होने का सौभाग्य इसके बाद कभी आयेगा या नहीं। इसलिए अपने सहयोग को शीघ्रातिशीघ्र अंकित कराना है या नहीं। यह मैं आप के विवेक पर छोड़ता हूं। **मैंने केवल प्रेरणा मात्र ही देने का प्रयास किया है।**

अजय टंकारावाला

दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के संस्मरण

20 नवम्बर 2013 को मुम्बई से 8 घंटे की यात्रा के उपरान्त जोहान्सबर्ग के प्रसिद्ध एयरपोर्ट पर पहुँचे। ये हमारी सातवीं विदेश यात्रा है। हिन्द व अटलांटिक दो महासागरों की उत्ताल तरंगों को स्पर्श करता हुआ अफ्रीका महाद्वीप का दूसरा सबसे बड़ा देश दक्षिणी अफ्रीका है। मुम्बई से इसकी दूरी सात हजार किलोमीटर है। 1221040 वर्ग किलो मीटर का क्षेत्रफल होने से भारत के यह बिहार प्रान्त के बराबर है। यहाँ की जनसंख्या 55 करोड़ है जिसमें 79.8 प्रतिशत ईसाई, 3 प्रतिशत पारम्पारिक आफ्रीकी आदिवासी धर्म के अनुयायी, 1.5 प्रतिशत मुस्लिम और 1.2 प्रतिशत हिन्दू हैं। इनमें लगभग 50 हजार व्यक्ति आर्य समाज से प्रभावित हैं। इस देश की तीन राजधानी है प्रिटोरिया (कार्यपालिका), बोनफोन्टेन (न्यायपालिका) केपटाऊन (विधायिका)। इस देश में 9 राज्य और 52 जिले हैं और माध्यामिक तक शिक्षा निःशुल्क होने से 89 प्रतिशत प्रजा साक्षर हैं। 23 विश्व विद्यालय हैं। यहां की मुद्रा को Rand (Zar) कहते हैं जो भारत के 6.50 रूपये के बराबर है। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने विश्व के 30 लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। सन् 1487 में पुर्त्तगाल नाविक वार्तोलोभ्यू के यहां पहुंचने से लेकर विदेशियों ने इसका सर्वविध शोषण किया है। डचों व ब्रिटिश अंग्रेजो ने यहाँ के काले आदिवासियों पर तीन शताब्दियों तक अमानवीय अत्याचार किए है। भारत, मेडागास्कर, इंडोनेशिया से दासों को लाकर कोड़े मार मारकर इनसे काम करवाया है। 1867 व इसके बाद यहाँ की भूमि पर सोना, हीरा, प्लेटिनियम आदि बहुमूल्य धातुओं का पता चला। पहले छोटे-छोटे कबीलों में चलने वाला देश 1910 में संगठित देश घोषित किया गया। अत्रत्य काले लोगों को पद, शिक्षा, साधन, सुविधा, चिकित्सा, न्याय आदि सभी क्षेत्रों में ये गोरे अंग्रेज अपमानित करते थे। इसी का गाँधी जी ने विरोध किया और इन लोगों को संगठित कर आंदोलन को मुखर किया। 31 मई 1961 को महारानी एलिजावेथ ने स्वयं को यहाँ की साम्राज्ञी घोषित कर वर्षो से कार्यरत ब्रिटेन के मंत्रिपरिषद् को समाप्त कर अत्रत्य संसद व चुनाव प्रणाली को मान्यता दे दी। गोरों कालों का वर्ण भेद फिर भी बना रहा। गोरों व यहां के लोगों से उत्पन्न गौरवर्णीय लोग जो यहीं बने रहे, उनकी नेशनल पार्टी का वर्चस्व बना रहा। महात्मा गाँधी जी द्वारा स्थापित अफ्रीकन, नेशनल कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया और श्री नेलशन मंडेला 27 साल जेल में कैद रहे। विश्व जनमत के आगे विवश हो, 1990 में उन्हें आजाद किया गया। बाद में वे देश के राष्ट्रपति भी बने। यहाँ वह स्थान हमें देखने को मिला जहाँ उनका प्रथम व्याख्यान सुनने के लिए दस लाख लोग एकत्रित हुए थे। 1905 में भाई परमानन्द जी ने दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज की स्थापना की थी। 15 मंदिरों सहित आर्य समाज की 26 संस्थायें इस देश में कार्यरत है। 28 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2013 तक World Vedic Conference 2013 का आयोजन डरबन में किया गया था। विश्व के अनेक देशों से आये सुयोग्य विद्वान मनीषियों ने अपने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। हिन्दुओं की एकता/विषय पर हमें अपने वक्तव्य का सुअवसर प्राप्त हुआ। अथर्ववेद के मन्त्र की व्याख्या करते हुए हिन्दुओं सहित पूरी मानव जाति को सुखी, शांत, समृद्ध, आनन्दित रखने के उपायों को हमने इस विषय को स्पष्ट करने के लिए बताया। प्रकारान्तर से गुरुकुलीय तपश्चर्या व आर्यों के योगदान को इसमें साधन बताया। अहिन्दी भाषी विशाल जनसमूह के समक्ष। ऋषि ऋण को चुकाना है आर्य राष्ट्र बनाना है, क्रांतिकारी भजन की पंक्तियाँ गुनगुनाते हुए व्याख्यान समाप्त किया। प्रभुकृपा से सभी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। सांस्कृतिक गीतों के कार्यक्रम में आए हुए दक्षिणी अफ्रीका में भारत के महामहिम राजदूत श्रीयुत बीरेन्द्र गुप्ता जी (Indian High Commissioner) तथा दूसरे दिन आए श्री टी.के. शर्मा जी (Consulate General of India) से पृथक-पृथक मिलकर हमने वैदिक साहित्य भेंट किया और उसे पढ़ने की प्रेरणा दी। आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. रामविलास जी को भी आंग्लभाष का वैदिक साहित्य दिया। 99 प्रतिशत जन शराबी व मांसाहारी हैं। छोटे से देश में सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कैसीना (जुआघर) 25 से ज्यादा हैं। प्रतिदिन 50 से ज्यादा हत्या हो जाती हैं एक वर्ष में 5 लाख से ज्यादा कन्या दुष्कर्म का शिकार होती हैं। असुरक्षा के भय से 4 लाख सुरक्षाकर्मी नौ हजार निजी कंपनियों के माध्यम से कार्यरत हैं जो कि पुलिस व सेना की कुल संख्या से ज्यादा है। दर्शनीय स्थलों में कृत्रिम लहरों की घाटी Valley of the waves, Cango Caves जहाँ हजारों वर्षो में चूने के ग्लेशियर बन गये हैं, 7 प्राकृतिक आश्चर्यो में एक मेज की भाँति पर्वत (Table Mountain), समुद्री जीव सील व आफ्रीकन पेंग्विन (Seal, Penguins), शुतुरमुर्ग के अंडे जो पाषणवत् होने से टूटते नहीं है, शुतुरमुर्ग की सवारी, पार्लियामेंट, बोटनिकल गार्डन में सैकड़ों प्रकार के फूल वृक्षादि आदि, Skywalk, शेर व चीते, गैंडा आदि को निकट से देखना Vshaka Marine World में साँप मछलियाँ आदि अपने कोच के आदेश पर डाल्फिन मछली का नृत्य, समुद्रतटो के अनेक प्वाइंटस, नेल्शन मंडेला जी का घर आदि प्रसिद्ध है। वोट बैंक के लालच में अत्रत्य सरकार आसपास के देश जिम्बाबे, नाईजीरिया से घुसपैठ करवा रही है। ड्रग्स व माफिया बड़ रहे हैं। भ्रष्टाचार से प्रजा पीड़ित हैं। अंग्रेजों के कारण सभ्यता तो आई है पर धोखा, धर्म, संस्कृति सब नष्टप्रायः हो गये हैं। आर्य समाज के किसी सुयोग्य विद्वान की जो अंग्रेजी में पूर्ण अधिकार रखता है। आवश्यकता है। इंसान अज्मो हिम्मत से जब दूर किनारा होता है। तूफान में टूटी किश्ती भगवान के सहारा होता है। सर्वेभ्यो नमोवाच्यम्-आपका ही

आनन्द पुरुषार्थी, अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी

आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब) दूरभाष-0161-2459563

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना (सत्र 2014-2015)

छठी कक्षा (आयु+ 9 से 11 वर्ष) एवं सातवीं कक्षा (आयु +10 से 12 वर्ष) में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण-पत्र (मूल्य केवल 100/-रूपये) भरकर दिनांक 30.03.2014 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। पंजीकरण-पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।

- ❑ कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 06 अप्रैल 2014 दिन रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी।
- ❑ सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उस दिन होगा।

सत्यानन्द मुंजाल, कुलपति

कर्मों का फल

❑ श्री हरिशचन्द्र वर्मा 'वैदिक'

सुख-दु:ख संसारिक होने से क्षणिक और परिवर्तन शील होता है। यह सुख-दु:ख अनेक कार्य-कारणों के द्वारा प्राप्त होता है। कर्म तीन प्रकार का होता है। 1. शरीर से जो कर्म किया जाता है वह शारीरिक, 2. मन से जो चिन्ता भावना और दुर्भावना किया जाता है वह मानसिक और ईश्वर के प्रति जो योग, यज्ञ, ध्यान, उपासना किया जाता है वह आध्यात्मिक कर्म है। इसके अलावा मानसिक सुख-दु:ख को आध्यात्मिक/अतिशीत, गर्मी, वर्षा और वायु जल प्रदूषण से जो सर्दी जुकाम होता है वह आधिभौतिक और जो कीड़े-मकोड़े, सर्प विच्छू के काटने तथा वज्रपात, भूंकम, बाढ़, सुनामी से जो दु:ख और मृत्यु होता है। उसे आधिदैनिक ताप कहते हैं। इन तीनों पर मानव कर्म का ही प्रभाव पड़ता है। उनके स्वाभाविक नियम में जब मनुष्य कल-कारखानो के धूयें तथा गन्दगी आदि से प्रदूषण फैलाकर उन देवी शक्तियों से छेड़खानी करता है। तभी अधिकतर बिजली के गिरने प्राकृतिक योग फैलने लगता है, जिनके प्रकोप से अनेक नुकशान और लोग मारे जाते हैं। इस प्रकार संसार के सभी लोग अपने-अपने पूर्व एवं वर्तमान कर्मों के द्वारा किसी न किसी दु:खों से पीड़ित रहते हैं।

जो भी कोई कर्म करता है उसका फल दो प्रकार का होता है। एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म/स्थूल फल-मेहनत, मजदूरी अथवा मुनाफा, एक दिन, या सप्ताह अथवा वर्ष में अवश्य मिलता है। अच्छे नियत से किया गया कर्म का संस्कार आत्मा पर अच्छा ही पड़ता है। पर जिस स्वार्थ, रिश्वत, भ्रष्टाचार अथवा कालाधन कमाया जाता है उस स्तेय का अनुचित संस्कार उसके आत्मा को अच्छादित करता रहता है।

इस प्रकार कामवासना में अंधा होकर जो लड़कियों का बलात्कार अथवा यौन-शोषण करता है। इस पाप कर्म का भी संस्कार उसके आत्मा को मलीन कर देता है और जब पकड़ा जाता है तब न्यायालय से उसे दण्ड अवश्य मिलता है, पर उसका संस्कार नहीं घुलता वह तभी छूटता है जब वह ऐसे पाप कर्मों से बिल्कुल पृथक हो जाता है। भ्रूण हत्या भी महापाप है ऐसे कुकर्म करने वालों का आत्मा पर पड़े अन्याय के संस्कार कभी मिटते नहीं है जबतक कि दुष्कर्म न करने का संकल्प ले लेते।

आज संसार इतना हिंसक हो गया है कि वह हिंसक जानवरों से भी बढ़ गया है, ऐसे लोग मरने के बाद उनकी आत्मा हिंसक योनि नहीं जाती है। क्योंकि शराबी के यहां, जुहाड़ी जुहाड़ी के यहां और चोर, चोरों के यहां जाना। किन्तु ये शराबी, जुहाड़ी, चोर कभी भी अच्छे भद्र मनुष्य के यहां जाना अच्छा नहीं समझते। कोई भी अपराधी जिनके कुकर्मों के संस्कार से आत्मा मलीन हो गया है अथवा जो समाज में बदनाम हो गया है, जब मनुष्य बुरे कर्मो को छोड़कर अच्छे कर्म करने लगे जाता है, तब क्रमश: उसके आम व्यवहार से, उसके आत्मा पर पड़े बुरे संस्कार भी नष्ट होने लग जाता है।

तात्पर्य यह कि जीवन में कर्मानुसार जैसा जिसका आत्मा पर संस्कार पड़ा रहता है उसे ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अनुसार उसी योनि में जन्म लेना पड़ता है। जैसे हिंसा अहिंसा में भेद है वैसे ही अपराध में भी अन्तर है। अदृश्य, कृमिकीट, मक्खी, मल, मच्छर, रोग फैलाने वालों और उड़ने, रेंगने वाले जितने हिंसक जीव है उन्हें मारने में कोई हिंसा नहीं है। पर पशु-पक्षी उपकारक प्राणियों को मारने में हिंसा है। इससे बढ़कर, हिंसा और पाप गुरु, बालक, नारी, वृद्ध और वेद विद्या के ज्ञाता कि है जिन्हें कभी नहीं मारना चाहिए। परन्तु यदि मानव आतंकवादी और हत्यारा है और जिनको मार देने से हजारो निरपराध मनुष्यों की रक्षा होती है उसे तुरन्त मार देना ही अहिंसा धर्म का पालन है। इसके अलावा भूख से तंग आकर स्तेय का उतना बड़ा अपराधीन ही होता जितना की सम्पत्तिशील भ्रष्टाचारी होते हैं।

इस प्रकार पाप और पुष्य कर्मों में अन्तर होता है। मनुष्य को जहां तक हो सके किसी दूसरे को दु:खी करके स्वयं को सुखी न समझें। अच्छे कर्म और न्यायपूर्वक भोग करें। अपनी आत्मा की आवाज को सुने अवहेलना न करे। लोभ वश कोई अनुचित कर्म न करे।

मनुष्य जैसे स्वतन्त्रता से कर्म करता है वैसे ही परमात्मा उसे उसका फल इसी दुनिया में भोगना पड़ता है और जो शेष घर रह जाता है उसे भोगयोनि में जाकर भोगना पड़ता है और जो अपने जीवन में अच्छे कर्म अधिक किए रहते हैं वे पुन: उभययोनि अर्थात् मनुष्ययोनि को ही प्राप्त होते हैं।

सुख, दु:ख, स्त्री, सुत, सम्पति और मान-अपमान, सब पूर्व एवं वर्तमान कर्मो के ही फल होते हैं, जिसका हेतु समझ में नहीं आता, इसलिए उसे पूर्व जन्म के शेष कर्मों के फलों से जोड़ दिया जाता है, जो उसे इन जन्म में प्राप्त होता है।

ज्योतिषीलोग इसे भाग्य और नक्षत्र का कारण बताते हैं जो बिल्कुल गलत है, क्योंकि एक साथ एक सेकन्ड में दो शिशु का जन्म होता है किन्तु दोनों का आयु, सुख-दु:ख, आहार-विचार पृथक-पृथक होता है।

संस्कार क्या है? जैसे चमेली के फूल को कपड़े में बांधकर थोड़ी देर बाद उसे फेंक दीजिए, कपड़े में फूल नहीं है किन्तु वह अपना संस्कार रूपी गन्ध कपड़े में छोड़ दिया। कर्म समाप्त हो गया पर उसका सूक्ष्म संस्कार उसके चित्त पर पड़ जाता है। इसी प्रकार जैसा संस्कार उस पर पड़ता रहता है, उस व्यक्ति का वैसा ही सोच-समझ और कर्म होता रहता है। संस्कार के अनुसार ही स्वभाव बनता है और जैसा स्वभाव बनता है, वह वैसा ही कर्म करता है। कर्म प्रधान होने से वह स्वयं को परिवर्तन भी कर सकता है। मनुष्य अपने कर्मों का स्वयं भोक्ता है।

भोजन उसे स्वादिष्ट लगा, अधिक खा लिया, किन्तु बाद में उसका उदर खराब हो गया। पेट में दर्द होने लगा। यहां ईश्वर का कोई दोष नहीं, उसने कर्म ही ऐसा किया कि उसे दु:ख भोगना पड़ा। अत: विधाता का विधान ही ऐसा है कि जैसा बीज बोया जाता है उसका फल वैसा ही मिलता है।

कर्मफल व्यवस्था बड़ा ही विचित्र है। जब बालक बीमार हो जाता है तो वह तो कष्ट भोग करता ही है, साथ ही उसके माता-पिता भी दु:खी और कष्ट भोग करते हैं। यह भी उनके कर्मो का ही फल है, न सन्तान के लिए कर्म करते और न उन्हें उस बालक के प्रति सुख-दु:ख में सुखी-दु:खी होना पड़ता है।

'खेत खाय गदहा, मार खाय जो लहा' एक दिन एक सेठ के वरपे में कुछ लड़के शोर मचाकर खेल रहे थे। उनमे एक लड़का वहां बैठकर उनके खेलों को देख रहा था। जो शब्द सुनकर सेठ ने ज्यों ही दरवाजा खोला कि सब लड़के भाग गये, किन्तु जो सीधा-साधा बैठा था, उसे मालिक ने दो थप्पड़ मार दिया। निरपराधी भी अपराधी बन गया। यहां भी उसे कर्म का ही फल मिला। यदि प्रतिवाद करता और कहता कि शोर करने वाले तो भाग गये, तो उसे दोषी समझता। इस प्रकार अपराधी के साथ रहने वाले निरपराधी भी दोषी बन जाते हैं। अत: कर्म का प्रभाव साथ में रहने वालों पर भी पड़ता है।

स्वामी अखिलानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि 'सृष्टि में मनुष्य का

आना, मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्मों के कारण हुआ है। यदि उसके अच्छे कर्म अधिक हैं तो मनुष्य बन गया है। यदि बुरे कर्म अधिक हैं तो पशु-पक्षी हो जाता है। यदि कर्म इतने अच्छे अधिक होते कि कर्म वासना की न रहती तो कर्म-बन्धन से पृथक हो जाता। अच्छे बुरे कर्मों का भोग मुझे सुख और दुःख रूप में प्रभु की व्यवस्था से मिलता है और यह भी निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य प्रत्येक विपाक की अर्थात् सुख-दुःख रूपी कर्म फल की किन्हीं साधनों द्वारा प्राप्त करता है। किसी प्राणी को यदि कर्म का विपाक प्राप्त होता है तो उसे सबसे पहले उस कर्म को प्राप्त करने के लिए शरीर रूपी साधन की आवश्यकता है।

कोई भी सुख-दुःख इस संसार में किसी भी प्राणी को विना किसी साधनों के प्राप्त हो यह असंभव है। मनुष्य को तीन साधनों से सुख-दुःख प्राप्त होते है। आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधि दैविक। इन तीनों प्रकार के सुख, दुःखों को प्राप्त करने और भोगने के लिए मनुष्य के पास ज्ञानेन्द्रियों और कर्मोन्द्रियाँ, मन और बुद्धि अपने कर्मों के विपाक प्राप्त करने, भविष्य के लिए कर्म करने और पूर्व जन्म के कर्मों के फल भोगने के लिए साधनरूप में दिए हैं। मनुष्य जिस दिन दुनियां में आया है वह जन्मदिन और जब इस दुनिया से जाता है, वह मृत्युदिन है। इन दोनों के मध्य के समय को आयु कहते हैं। आयु परमात्मा देता है और जन्म से पूर्व आयु देता है। हम प्रार्थना भी करते है ''स्तुतामया बरदा' आयुदाअग्नेसि आयुर्मेदेहि'' इत्यादि मन्त्रों से स्पष्ट है कि परमात्मा आयु देता है। (अथर्व. 19.1.7) और योगदर्शन में आया है कि जाति, आयु और भोग कर्मफल हैं किन्तु कर्म प्रधान होने से उसके द्वारा आयु को न्यूनाधिक भी किया जा सकता है। क्योंकि ''जीवेमः शरदः शतम्' (यजु. 36. 24) हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि सौ वर्ष तक जीवे।

मो. 08158078011

गौ-दान : महा-दान

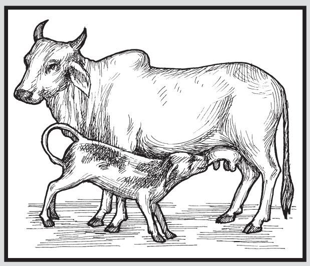

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा
परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं
अथवा
गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

मैं कौन हूँ?

❐ - मनमोहन कुमार आर्य

महाभारत में यक्ष व युधिष्ठिर के बीच हुए प्रसिद्ध संवाद में दुनियां के सबसे बड़े आश्चर्य के समाधान पर निर्णय दिया गया है कि मनुष्य नित्य-प्रति लोगों को मरते हुए देखता है, चिता में जलते हुए देखता है, परन्तु 'मृत्यु' को देखकर व इस शब्द को सुनकर डर कर चिन्तित व दुखी हो जाने पर भी इस तथ्य को भुला देता है कि एक दिन उसको भी मरना है। होना तो यह चाहिये था कि वह अपने जीवन के सभी कार्यो को छोड़कर इस प्रश्न के हल पर लग जाता और मृत्यु से बचने व उस पर विजय पाने के उपाय खोजता परन्तु यह सत्य व इसमें निहित रहस्य उसके विचार व चिन्तन में नहीं आता, **यहीं संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य है।** मृत्यु से संबधित इस प्रश्न ने महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा भगवान बुद्ध को भी विचलित व व्याकुल किया था, परन्तु इन्होंने इस प्रश्न की उपेक्षा नहीं की थी जैसी कि अन्य सभी लोग करते हैं। ''मृत्यु'' जैसा, इसी प्रकार का व इससे ही जुड़ा हुआ आश्चर्य है कि सारे संसार के सभी शिक्षित, विद्वान, राजनेता, कारोबारी व अन्य लगभग 7 अरब लोग नहीं जानते कि वह वस्तुतः, स्वरूपतः, सत्तात्मक या अस्तित्व के रूप से, स्वयं की यथार्थ उत्पत्ति, स्थिति व मृत्यु या विनाश के रहस्य व सत्यार्थ को पूरी तरह से नहीं जानते और न जानने का प्रयत्न ही करते हैं। **एक प्रकार से संसार की सभी राजनैतिक व सामाजिक समस्याओं का एक प्रमुख कारण है कि संसार के लोग अपने अस्तित्व को यथार्थ रूप में नही जानते और प्रायः सभी जीवन के वास्तविक उद्देश्य से विमुख या अनभिज्ञ हैं।** ***इन प्रश्नों का उत्तर केवल वेद में और वैदिक धर्म में ही मिलता है।*** अन्य मतों, सम्प्रदायों आदि के संस्थापकों ने इन मत-सम्प्रदायों के ग्रन्थों में **''मैं व मेरे''** के अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों पर विचार ही नहीं किया और न उनसे इस प्रश्न का समाधान मिलता है। **आज ज्ञान व विज्ञान के युग में सभी मतों व मतान्तरों का इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर उदासीन रहना, हल न ढूढंना व अपने अनुयायियों को इसके यथार्थ समाधान से वंचित रखना भी एक आश्चर्य है एवं एक प्रकार की धोखाधड़ी है।** इन सभी मतों के पास अथाह धन-सम्पत्तियां एवं विद्वानों की बहुत बड़ी सेना है परन्तु यह सभी लोग इस प्रश्न की जानबुझकर उपेक्षा करते हैं। समाधान मुश्किल नहीं है परन्तु लगता है कि उन्हें अपना आधार खतरे में लगता है, वरना अन्य क्या कारण हो सकता है? यह जान लेने के बाद कि एक अनपढ़ व अशिक्षित मनुष्य को अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं है और शिक्षित मनुष्य को भी नहीं है और न वह इसे जानने के लिए प्रयासरत है तो प्रश्न उठता है कि क्या **'मैं व मेरे'** के अस्तित्व के यर्थाथ ज्ञान से जुड़े प्रश्नों व इसके विशद ज्ञान की आज प्रासंगिकता है भी या नहीं?

हम समझते हैं कि ''मैं व मेरे'' से हमारा सारा अतीत, वर्तमान व भविष्य जुड़ा हुआ है। हमारे वर्तमान व भविष्य के सभी सुख-दुख हमारे इस प्रश्न के यथार्थ उत्तर से प्रभावित होते हैं किंवा हम व प्रत्येक मनुष्य दुःख व पश्चाताप से बच सकते हैं और भावी जीवन व परजन्म के दुःखों को सुखों में बदल सकते हैं। ''मैं'' का ज्ञान न होने के कारण जीवन का उद्देश्य व उसकी दिशा तय नहीं हो पाती। एक गुमराह मनुष्य की भांति संसार में जीवन बिता कर जन्म मरण से मुक्ति, ईश्वरीय आनन्द की अनुभूति, ईश्वर साक्षात्कार जो प्रकृति व भौतिक वस्तुओं के साक्षात्कार व सुख के उपभोग से कहीं अधिक लाभप्रद व सुखद-सुखकर है, वंचित रहते हैं। इसका ज्ञान हो जाने पर जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य समझ में आता है अन्यथा मात्र सुख के साधन बटोरने व रोगी होकर मर जाने व परजन्म में अवनति को प्राप्त होकर जीवन की हानि होती है। **अतः यह प्रश्न सर्वाधिक प्रासंगिक है। इससे संसार का यह महान आश्चर्य सिद्ध होता है कि हम स्वयं को तो जानते नहीं हैं और दूसरी ओर हम सारे संसार को जानने, उसे शिक्षित करने व उनके धर्मगुरु बनकर उनसे नाना प्रकार के आचरण कराते हैं और यह मिथ्या अभिमान पालते हैं कि हम ज्ञानी व विद्वान हैं, शिक्षक व धर्मगुरु हैं।** प्रश्न के महत्व को जान व समझ लेने के बाद आईये, अब हम इस प्रश्न के उत्तर पर विचार व समाधान की ओर बढ़ते हैं।

सभी मनुष्य माता-पिता के द्वारा जन्म लेते हैं। जन्म के कुछ दिनों बाद ही शिशु का नामकरण किया जाता है। यही नाम मनुष्य के भावी जीवन में उसकी पहचान बनता है। यदि कोई हमारा नाम पुकारता है तो हम उसकी ओर उन्मुख होकर पूछते हैं कि कहिए, क्या बात है? यदि कोई अपरिचित व्यक्ति हमें अन्य किसी सम्बोधन से सम्बोधित करे या पुकारे तो उसे देखकर उससे बातचीत करते हैं। **इससे यह ज्ञात होता है कि मेरा अस्तित्व है।** अब यदि हम किसी से भी पूछे कि आप कौन हैं तो वह अपना नाम, पिता का नाम, अपना पता व यदि दुकानदार, बिजीनेस मैन, वकील, डाक्टर आदि है तो अपना कार्य, व्यवसाय या पद भी बता सकता है। यह उत्तर गलत नहीं है परन्तु यह अधूरा उत्तर है। हम इन परिचय सूचक शब्दों के अतिरिक्त और भी हैं जो अधिक महत्वपूर्ण है और वह इस परिचयात्मक विवरण में शामिल नहीं है। यदि कोई अध्यापक, अभियन्ता या डाक्टर है तो वह इससे पूर्व कभी एक बालक रहा होगा, फिर विद्यार्थी रहा होगा तथा उसके बाद अध्यापक बना होगा। अतः उसका परिचय परिवर्तन को प्राप्त होता दिखाई दे रहा है। हम अपना इस प्रकार जो परिचय देते हैं वह परिचय मुख्यतः हमारे शरीर से सम्बन्ध रखता है। हमारा यह शरीर माता के गर्भ से जन्म लेता है और वृद्धि को प्राप्त करता हुआ शैशव, बाल्य, यौवन, प्रौढ़ व वृद्धा अवस्थाओं को प्राप्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। अपने शरीर के लिए जब हम बात करते हैं तो कहते है कि मेरा शरीर, मेरा हाथ, मेरा सिर, मेरी आंख आदि। **इससे तो यह बोध होता है कि 'मैं' कुछ और है और मेरा शरीर उस 'मैं' का है।** शरीर में विद्यमान सभी अंग भी उसी प्रकार 'मैं' शब्द वाची मनुष्य के हैं। यह उसी प्रकार से है, जैसे मैं कहूं कि मेरे पिता, मेरी माता, मेरे आचार्य, मेरे गुरु, मेरी पुस्तक, मेरा घर आदि। यह सब वस्तुयें मेरी हैं परन्तु ''मैं'' नहीं है। इससे ज्ञात होता है कि 'मैं' मेरे शरीर, इसके अंगों व इसके सम्बन्धियों से भिन्न है। **मृत्यु के उदाहरण से यह स्पष्ट है कि मृतक शरीर व इसके सभी अंगों के विद्यमान होने पर भी जीवित अवस्था की सभी क्रियायें बन्द हो जाती है और शरीर में सड़ने की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। मृत्यु से ज्ञात होता है कि शरीर से किसी महत्वपूर्ण तत्व वा सत्ता का पलायन या वियोग हुआ है जिसकी उपस्थिति में यह सभी संवेदनाओं को ग्रहण करता था। जीवित व्यक्तियों के सभी कार्य**

करता था तथा अब उनका न होना किसी तत्व के इस शरीर से निकल जाने के कारण हो रहा है। अब इसमें 'मैं' कहने वाला व इस शरीर को मेरा, शरीर के अंगों व किन्हीं-किन्ही जड़ व भौतिक वस्तुओं को मेरा कहने वाला तत्व इसमें नहीं है।

यहां हम देखते हैं कि पहले शरीर में कोई चेतन तत्व था जिसके कारण इसमें ज्ञान व उसके अनुसार क्रियायें होती थी। यह सुख व दुःख का अनुभव करता था। **यह जड़, पंच-भौतिक शरीर उस चेतन सत्ता के ही ज्ञान, क्रियाओं वा कर्मों एवं भोगों का एक उपकरण था।** जड़-अचेतन व निर्जीव पदार्थो का तो अपना कोई प्रयोजन होता नहीं है। शरीर में चेतन तत्व की उपस्थिति तक उसमें ज्ञान, कर्म व भोग का होना व चलना दृष्टिगोचर होता है। जब शरीर की सब क्रियायें बन्द हो जायें और यहां तक की हृदय की धड़कन व नाड़ी का चलना एवं फड़कना भी रूक जाये तब कह देते हैं कि अमुक व्यक्ति की मृत्यु हो गई है। चेतना शून्य शरीर में वह तत्व अब नहीं है जो कुछ समय पहले अपने परिचय में अपना नाम, पिता का नाम व स्वयं को प्राचार्य, आचार्य, विद्यार्थी, कर्मचारी, मजदूर या डाक्टर आदि बताता था। अब उस 'मैं' का स्वरूप जानने का प्रयत्न करते हैं। ***जो तत्व शरीर से निकल गया है वह चेतन, अभौतिक, आंखों से न दिखाई देनेवाला, सूक्ष्म, एकदेशी, अनुत्पन्न, अनादि, अजन्मा, नित्य, अमर, अनन्त, अविनाशी, कर्म करने में स्वतन्त्र व फल भोगने में परतन्त्र, अविकारी, आकार रहित, कर्मानुसार जन्म व मोक्ष को प्राप्त होने वाला, पाप कर्मो को करके निम्न योनियों में जाने वाला व अच्छे व पुण्य कर्मो को करके मनुष्य व देव योनियों में जन्म प्राप्त करने वाला है।*** **इसके विशेष स्वरूप का ज्ञान, विचार-चिन्तन, ध्यान, स्वाध्याय, उपदेश-प्रवचन आदि के श्रवण द्वारा तो अधिंकाश हो जाता है परन्तु समाधि में अधिक निर्भ्रम व संशयरहित स्थिति बनती है।** 'मैं' का एक परिचय यह भी है कि यह योगभ्यास द्वारा सफलताओं को प्राप्त करते हुए अन्ततः ईश्वर साक्षात्कार करता है जिसके बारे में उपनिषद कहती है कि **हृदय की सभी गांठें खुल जाती हैं व सारे संशय दूर हो जाते हैं।**

आईये, जीव के स्वरूप पर आगे विचार करते हैं। 'मैं' शब्द का प्रयोग स्वयं के लिए करते हैं जो कि एक चेतन तत्व है क्योंकि ज्ञान, कर्म व भोग जीवात्मा के गुण व लक्षण है। अभौतिक का अर्थ है कि यह प्रकृति के परमाणुओं से मिलकर नहीं बना है अपितु हमेशा से एक जैसा निरवयव तत्व है। इस जीवात्मा को न तो ईश्वर ने बनाया है और न यह अन्य किसी निमित्त व उपादान कारण से बना है। यदि बना होता तो इसका अन्त भी अवश्य होता जिस प्रकार प्रत्येक जन्म लेने वाली भौतिक व जड़ सत्ता की मृत्यु होती है। **यह एक नियम है कि हर उत्पन्न पदार्थ का विनाश भी अवश्य ही होता है, जीवात्मा व ईश्वर भी इसके अपवाद नही हो सकते थे यदि यह दोनों उत्पन्न हुए होते।** जीवात्मा, ईश्वर का अंश भी नहीं है। ईश्वर का अंश जीवात्मा इसलिये नहीं हो सकता है कि यदि ऐसा स्वीकार करते हैं तो मानना पड़ेगा ईश्वर से एक या अधिक जीवों के पृथक होने से ईश्वर खण्डित हुआ है। ऐसा खण्डनीय ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, एकरस व निरवयव न होने से ईश्वर ही नहीं रहता क्योंकि खण्डित ईश्वर कारण प्रकृति से सृष्टि का निर्माण व उसकी भलीभांति व्यवस्था नहीं कर सकता। मनुष्यों में भी हम देखते हैं कि यदि किसी व्यक्ति का कोई अंग यथा आंख, कान, हाथ या पैर खण्डित या त्रुटिपूर्ण हो या सामान्य या पूर्ण कार्य न करे तो फिर उस व्यक्ति का पूरा शरीर स्वस्थ व्यक्ति के समान कार्य नहीं कर सकता। उसे अन्यों पर निर्भर होना पड़ता है। जीवात्मा को जड़ पदार्थो से बना इस कारण नहीं मान सकते कि जड़ पदार्थो में चेतन तत्व के गुण यथा ज्ञान, स्वतन्त्र कर्म व सुख-दुख का भोग उत्पन्न नहीं हो सकते जिसका कारण जड़ पदार्थो की कारण व कार्य अवस्था प्रकृति में चैतन्यता का गुण- **ज्ञान, कर्म व भोग** नहीं है। कारण के गुण ही कार्य में आतें हैं, ***अतः कारण प्रकृति में चैतन्य गुण का अभाव परिणामी पदार्थ में उत्पन्न नहीं हो सकता।*** यदि जीव नित्य, अनादि, अजन्मा व अविनाशी न होता तो फिर इसका कारण तत्व जो भी होता, उसे बनाने वाला ईश्वर ही होता। जिस जीव की मृत्यु होकर उसका अन्त, अर्थात् वह अपने कारण तत्वों में विलीन, हो जाता तो इससे सारा कर्म-फल का सिद्धान्त ही ध्वस्त हो जाता। यदि ऐसा होता तो फिर संसार में कोई ईश्वरीय व्यवस्था हो ही नही सकती थी। जीवात्मा का जो भी कारण तत्व होता उससे नये-नये जीव बना करते और फिर कर्म फल सिद्धान्त न होने से सबको पूरी तरह एक समान जन्म मिलता। **सबकी शक्ल-सूरत अर्थात् मुखाकृति, लम्बाई, चौड़ाई, रंग व सुख-दुख आदि एक समान होते जैसे किसी उद्योग के सभी उत्पाद एक जैसे होते हैं। किन्ही दो मनुष्य में कोई अन्तर नहीं होना चाहिये था। फिर स्त्री-पुरूष के भेद का भी कोई न्यायोचित कारण न होने से सृष्टि की प्रक्रिया चल ही नहीं सकती थी। इससे सिद्ध है ईश्वर व जीव, इन दोनों चेतन तत्वों का तो स्वतन्त्र अस्तित्व सदा-सर्वदा से है साथ ही प्रकृति भी अचेतन-जड़, अनादि, नित्य, अजन्मा व अविनाशी है।**

यह अजन्मा व अनादि जीवात्मा सनातन है। क्योंकि यह कभी बना नहीं है अर्थात् यह अजन्मा व अनुत्पन्न है। जो पदार्थ अनुत्पन्न व अजन्मा होते हैं उनका नाश कभी नहीं होता। अतः इसका कभी नाश भी नहीं होगा। इसलिए इसे नित्य, अविनाशी, अमर व अनन्त कहते हैं। शरीर में रहते हुए व शरीर में से निकल जाने पर यह दिखाई नहीं देता, अतः यह सूक्ष्म है। क्योंकि इसकी सत्ता शरीर के अन्दर एक स्थान पर विद्यमान है तथा सूक्ष्म भी है अतः यह विछिन्न वा एकदेशी संज्ञा से विभूषित है। परमात्मा जीवों को उनके कर्मानुसार जन्म देता है जिसमें वह अपने कर्मो के फलों का भोग करते हैं। कर्मो के आधार पर संचित कर्म या प्रारब्ध बना है जिससे पुनर्जन्म होता है। स्त्री व पुरूष का अन्तर भी इसी प्रारब्ध के कारण से है। इसलिए कहते हैं कि जीवात्मा कर्मो का कर्ता व फलों का भोक्ता है। जीवात्मा जो भी कर्म करता है उसमें यह स्वतन्त्र रहता है। यह भलाई करे, चाहे बुराई करे। अच्छा कर्म करने पर ईश्वर से पारितोषिक प्राप्त होता है और बुरे कर्म करने पर कर्मानुसार दण्ड भी मिलता है, इसमें अर्थात् फल भोगने में यह परतन्त्र है। जिन व्यक्तियों को पता होता है कि गलत काम करने पर कठोर दण्ड मिलेगा तो वह गलत काम करना छोड़ देते हैं या करते ही नहीं। इसलिए हमारे ज्ञानी, विद्वान व ऋषि-मुनि परोपकार, सेवा, यज्ञ, ईश्वरोपासना व सत्य का प्रचार जैसे कार्य ही करते थे जिसका कारण उनका ईश्वरीय कर्म-फल व्यवस्था पर दृढ़ विश्वास होता था। आत्मा को अविकारी इस लिए कहते हैं कि इसका स्वरूप सदैव एक समान, परिवर्तन रहित, अपरिणामी रहता है एवं इसमें किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता। इसका कोई निश्चित आकार अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई ऊंचाई व **(शेष पृष्ठ 21 पर)**

मेरी धोती मेरी छवि

❒ ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत, वी.एस.एम.

तिब्बत की राजधानी ल्हासा में शाम के समय ऐसे ही घूम रहा था। बड़ी बड़ी दुकानों के साथ पटरी बाजार पर सजाई हुई चीजो को देख कर न खरीदने की इच्छा होते हुए भी मोल भाव कर रहा था। एक मार्के की बात यह सामने आई कि पीतल और तांबे की अधिकांश वस्तुएँ और कुछ चमकीले रंग बिरंगे छोटे छोटे पत्थर के टुकड़े तिब्बती व्यापारी भारत के ही बाजारो से लाए थे। एक व्यापारी ने तो मेरी वेष भूषा और रंग रुप देख कर कहा कि यह सब चीजें तो आपको अपने ही देश मे सस्ती मिलेंगी। मुझे यह भी देख और सुन कर सुखद आश्चर्य हुआ कि भारतीय वस्तुओं को वहां बेचने वाले तिब्बती पुरुष, महिलाएं और बच्चे काम चलाऊ हिंदी जानते हैं। फिर भी वो मुझसे खुल कर बात करने से कतराते रहे और बाद में एक व्यक्ति ने बताया कि जब वो विदेशियों से बात करते हैं तो चीन की पुलिस उन पर निगाह रखती है। बाजार से जरा हट कर, दलाई लामा के पुराने महल और कार्यालय, पोताला पैलेस की ओर जा रहा था तो एक तिब्बती व्यक्ति मेरे निकट आया और मेरी धोती का एक छोर खींचने लगा। मैने चीनी भाषा मे उससे कहा कि मेरे भाई तुम यह क्या कर रहे हो। उसने भी चीनी भाषा मे ही उत्तर दिया कि श्रीमान मै यह जानना चाहता हूं कि यह कपड़ा जो आप लपेटे हुए हैं इसकी लंबाई कितनी है। यह भी कि इसका नाम क्या है। मैने उत्तर देकर उसे संतुष्ट किया कि इसे धोती कहते हैं और इसकी लंबाई लगभग पांच मीटर है। यूं मेरी वेषभूषा यानि धोती और कुर्ता भी विदेशों में मे आकर्षण का केंद्र रहते हैं। इससे मेरी एक अलग पहचान बन जाती है और भारतीय वस्त्रो का एक तरह से हल्का सा प्रचार भी हो जाता है।

धोती वाले ब्रिगेडियर साहब- भारतीय जन मानस में एक सैन्य अधिकारी की छवि अंग्रेजों की छवि से भिन्न नहीं रही है। आम आदमी यह समझता है कि सेना के ब्रिगेडियर जैसे उच्च अधिकारी सदैव सूटेड बूटेड रहते हैं उनकी बड़ी बड़ी मूछें होती हैं - हाथ मे हल्का केन (डंडा) रहता है और बोलते केवल अंग्रेजी हैं। यद्यपि मैने स्वयं तीन दशकों से अधिक का समय सैन्य सेवा मे बिताया किंतु अंग्रेजों की छवि पाने की कभी कोई अभिलाषा मेरे मन में नहीं उभरी। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि आर्य समाज की पृष्ट भूमि और हिंदी से प्रेम होने की वजह से मैंने कभी अंग्रेजियत को अपने जीवन मे पास नही फटकने दिया। अपने वेशभूषा और भाषा के कारण कभी कभी अपरिचित लोग यह समझ ही नही पाते कि मैं एक वरिष्ठ सैन्य अधिकारी रहा हूं और सेवानिवृत होने के बाद देश विदेश की यात्रा मे धोती कुर्ता ही पहनता रहा हूं। इससे कभी कभी हल्की सी कठिनाई भी हुई किंतु हर कठिनाई और समस्या का समाधान स्वत: मिलता भी रहा। जब होंग कोंग को ब्रिटेश शासन चीन शासन को हस्तांतरित करने वाला था तो मुझे आमंत्रित किया गया कि मैं होंग कोंग जाकर वहां की वस्तुस्थिति पर एक टी वी डॉक्युमैंट्री बनाऊं। होंग कोंग के हवाई अड्डे पर जैसे ही मैं बाहर आया तो अपनी आगवानी के लिए किसी को भी नही पाया। हालांकि मैं चीनी भाषा (मैंडरिन) बोल लेता हूं किंतु होंग कोंग कि अधिकांश निवासी कैंटनीज भाषा बोलते हैं। फिर उच्चारण का भेद भी हो ही जाता है। समस्या विकट थी। अपने सामान के साथ निकास द्वार के सामने जब मैने चार पांच चक्कर लगाए तब एक चीन के अधिकारी मेरे पास आए और बोले क्या आप हीं ब्रिगेडियर सावंत हैं जो टी वी डाक्यूमैंट्री बनाने आएं हैं। मैने कहा जी हां। उन्होने क्षमा याचना की और कहा कि थोड़ी देर से वो मुझे देख रहे थे लेकिन तय नही कर पा रहे थे कि मेरी वेषभूषा और सामान्य सैन्य अधिकारी की वेषभूषा मे तालमेल क्यो नहीं है। मैने उन्हे इतिहास बताया तो वो संतुष्ट हुए। मैने ईश्वर को भी धन्यवाद दिया कि दुरित दूर हुआ।

ऐसी ही एक घटना, स्वदेश में जालंधर रेलवे स्टेशन पर भी हुई। डी ए वी कॉलेज ने मुझे वेद प्रवचन के लिए आमंत्रित किया था और जब मैं शताब्दी से प्लेटफॉर्म पर उतरा तो वहां पर भी किसी ने मेरी अगवानी नही की। दो तीन मिनट बीत जाने के बाद मेरे कानों में आवाज आई, एक सूटेड बूटेड सज्जन किसी से मोबाईल पर कह रहे थे कि गाड़ी तो आ गई लेकिन ब्रिगेडियर साहब नही आए। तो मैने स्वंय उनसे पूछा कि क्या आप ब्रिगेडियर सावंत की राह देख रहे हैं। उनके हां कहने पर मैंने अपना परिचय दिया और फिर वो एक बड़ी सी कार में उस होटल ले गए जहां मुझे ठहरना था। उन्होने मुझे बताया कि पंजाब मे धोती पहनने वालों को ढीला ढाला आदमी माना जाता है। मझे भी याद आया कि आर्य समाज के इतिहास में यह चर्चा आई है कि पंडित लेखराम जी जो पेशावर निवासी थी उन्होने महात्मा मुंशी राम (स्वामी श्रध्दानंद) से एक बार कहा - लाला जी आप यह धोती क्यों पहनते हैं यह तो यू पी वाले ढीले ढाले लोग पहनते हैं हम पंजाबियो को नही पहनना चाहिए। इस टिप्पणी के बावजूद महात्मा मुंशीराम जी ने अपनी वेशभूषा नही बदली। इस घटना से मुझे भी मानसिक बल मिला कि मैं धोती पहनना जारी रखूं। वेद प्रचार के सिलसिले में जब मैं इंग्लैंड गया तो महाशय गोपाल चंद्र, जो मेरी अगवानी के लिए आए थे- ने मुझसे कहा कि मैं भाग्यशाली हूँ। आखों ही आखों मे मैने प्रश्न किया कि क्यों तो उन्होने कहा कि आप धोती कुर्ता पहने हुए हैं और आज इक्कीसवीं शताब्दी इंग्लैंड मे कोई अंग्रेज इस पर आपत्ति नही करेगा। लगभग चार दशक पहले की अपनी कथा उन्होंने सुनाई कि उस समय बिना सूट बूट पहने कोई व्यक्ति सड़क पर चल नही सकता था। संभवत अंग्रेजों का यह मानना था कि अगर इंगलैंड में रहना है तो उन्ही की तरह की वेषभूषा होनी जरूरी है और उन्ही की भाषा बोलनी है। यह जानकर मुझे बड़ा संतोष हुआ कि अब वेषभूषा और भाषा पर कोई प्रतिबंध नही है और धोती पहनकर मैं पूरे इंग्लैंड मे घूम सकता हूं। यूं मेरे पास ऐसे भी न सूट था न बूट।

भारत के काले अंग्रेज-यह विचित्र बात है कि इंग्लैंड में तो मैं धोती कुर्ता पहन कर ब्रिटेश साम्राज्ञी क्वीन इलिजेबेथ द्वितीय के महल बकिंघम पैलेस में घूम आया किंतु अपने ही देश भारत में अनेक ऐसे संस्थान और क्लब हैं जहां धोती कुर्ता पहन कर जाने पर प्रतिबंध है। सशस्त्र सेनाओं के अफसर मैस और क्लब, जिमखाना क्लब और रॉयल यॉट क्लब आदि ऐसे भारत भूमि पर अंग्रेजी संस्कृति के पोशक हैं जो सूट बूट और टाई के अलावा और कोई पहनावा पहचानते ही नहीं। यह सांस्कृतिक विडंबना है। मेरे विचार में अब समय आ गया है कि जब अंग्रेज संस्कृति पोशक संस्थानो के विरुध्द अभियान चलाकर उन्हें भारत भूमि और भारतीय संस्कृति से प्रेम का पाठ पढ़ाना आवश्यक हो गया है। संभवत युवा वर्ग इस दिशा मे आगे आने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। यदि उनके पाठ्यक्रम में स्वदेश प्रेम का पुट दिया जा सके।

- 609, सेक्टर 29, अरुण विहार, नोएडा - 201303

दशमेश गुरु का खालसा और भारत

❐ विनोद बंसल

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मुगलों के अत्याचारों से हिन्दू समाज को न सिर्फ बचा कर बल्कि उसके संस्कार, संस्कृति व स्वाभिमान की रक्षा करने में गुरू गोविन्द सिंह जी का योगदान अविस्मरणीय है। वे शायद दफनिया के एक मात्रा ऐसे महा पुरुष हैं जिनकी तीन पीढ़ियों ने दश व धर्म की रक्षार्थ न्योछावर कर दीं। वे बाल्यकाल की अल्पायु में ही इतने गंभीर व धीर-वीर थे कि पिता गुरु तेग बहादुर ने भी बलिदान की शिक्षा शायद उन्हीं से ली। उसके बाद क्या था, उन्होंने अपने चारों बेटों के साथ स्वयं को भी राष्ट्र पर आहुत कर दिया किन्तु वे हिन्दुओं के स्वाभिमान व देश की रक्षा से विमुख नहीं हुए। खालसा पंथ की स्थापना, गुरु ग्रंथ साहिब जैसा महा ग्रंथ, उनके द्वारा जलाई गई स्वतन्त्रता ज्योति तथा धर्म की रक्षार्थ अन्याय के विरूद्ध लड़ने की भावना आज भी विश्व भर के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

मात्र नौ वर्ष का एक छोटा सा बालक सन् 1675 में पिता के साथ आसाम से पंजाब आया। पिता (गुरू तेग बहादुर) का दिन-रात देश और समाज का चिन्तन तथा धर्म रक्षा का संकल्प बालक के मन को अन्दर तक छू रहा था। एक दिन गुरू तेग बहादुर कश्मीरी पंडितों पर हुए मुगलों के अमानवीय अत्याचारों की कथा सुनते-सुनते कहने लगे- इस समय धर्म रक्षा का एक ही उपाय है कि कोई बड़ा धर्मात्मा पुरूष बलिदान दे। यह बात बालक गोविन्द बड़े ध्यान से सुन रहा था। सभी लोग विषय की गम्भीरता को देख मौन थे। अचानक बालक गोविन्द बोल पड़ा-पिताजी, आज के समय में आप से बढ़कर दूसरा महात्मा व धर्मात्मा पुरूष और कौन हो सकता है। नौ वर्षीय बालक के इस उत्तर पर गुरू तेग बहादुर बहुत प्रसन्न हुए। मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी सन् 1675 को पिता के बलिदान के पश्चात् बालक गोविन्द नौ वर्ष तक आनन्द पुर में रहे जहाँ उन्होंने अपनी भावी जीवन की योजना बनाई। अपने बलिदान से पूर्व गुरू तेग बहादुर ने यहीं पर उन्हें गुरुता गद्दी प्रदान करते हुए देश, धर्म व दुःखी जनता का उद्धार करने का आशीर्वाद दिया। बालक गोविन्द से गुरु गोविन्द बने गुरु गोविन्द सिंह जी ने सिख समुदाय को हुक्म नामे भेज-भेज कर अस्त्र, शस्त्र और धन एकत्रित किया तथा सामाजिक धारा को क्रांतिकारी रूप देने के लिए एक छोटी सेना भी बनाई।

भारत में मुगल शासकों के निरन्तर बढ़ते आक्रमणों से देश और धर्म को बचाने के लिए सन् 1699 में बैसाखी के दिन गुरू गोविन्द सिंह जी ने अपने अनुयाइयों की एक विशाल सभा बुलाई जिसे संबोधित करते हुए उन्होंने हाथ में नंगी तलवार लेकर प्रश्न किया कि है कोई, जो धर्म के लिए अपने प्राण दे सके? उनकी इस प्रेरणादायक ललकार को सुनकर बारी-बारी से दयाराम खत्री, धर्म दास जाट, मोहकम चंद धोबी, हिम्मत सिंह रसोइया तथा साहब चंद नाई अग्रसर हुए जिनके पश्चात् सारा निश्तेज समाज जोश में भर, उठ खड़ा हुआ। उन्होंने यहीं पर जात-पात के भेदभाव में बिखरे हिन्दू समाज को समन्वित कर खालसा के रूप में खड़ा किया और इस प्रकार खालसा पंथ की स्थापना हुई। गुरु गोविन्द सिंह एक बड़े समाज सुधारक थे। सती प्रथा, छुआ-छूत इत्यादि सामाजिक बुराइयों से दूर समानता पर आधारित सामाजिक संरचना के वे पक्षधार थे। वीरता व पराक्रम में उनका मुकाबला नहीं था। चिड़ियों के समान डरपोक भारतीय युवकों को वे कहा करते थे कि

सवा लाख से एक खड़ाऊ, चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊं,
तबै गोविन्द सिंह नाम कहाऊँ।

औरंगजेब समर्थक, पंजाब के पर्वतीय नरेशों को, भंगाणी के युद्ध में पराजित किया और 1703 में उन्होंने चमकौर के युद्ध में केवल 40 सिखों की सहायता से मुगलों की विशाल सेना के छक्के छुड़ा दिये थे। इसमें गुरू गोविन्द सिंह के दो बड़े पुत्रों अजीत सिंह व जुझार सिंह के साथ पांच प्यारों में से तीन प्यारे शहीद हो गये।

सन् 1703 में सरहिन्द के नवाब वजीर खाँ ने उनके दो छोटे पुत्रों जोरावर सिंह और फतेह सिंह को, इस्लाम स्वीकार न करने के कारण दीवार में जीवित चिनवा दिया। चारों पुत्रों और पत्नी की क्रूर हत्या होने के बावजूद भी गुरुजी एक महान योगी की तरह बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए 1706 में उन्होंने खिदराना का युद्ध लड़ा। वे महान योद्धा तो थे ही, संगीत, साहित्य व कला के क्षेत्र में उनकी गहरी रूचि थी। वे रचनाकार कवि भी थे। उनके द्वारा रचित दशम ग्रन्थ हैं जिसमें-जापु साहब, अकाल स्तुति, विचित्र नाटक, चण्डी चरित्र, चण्डी दीवार, जफरनामा, चौबीस अवतार, ज्ञान प्रबोध आदि प्रमुख हैं। उनके दरबार में 52 कवि थे। इनमें दया सिंह, नंदलाल, सेनापति चन्दन, खानखाना आदि प्रमुख थे। उनकी रचनाओं में वीर रस की प्रधानता थी। उन्होंने अपने बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहब को गुरु मानने का आदेश देकर गुरुता गद्दी पर आसीन किया। संवत् 1765 अर्थात् ईसवीं सन् 1708 में नांदेड़ में गोदावरी के तट पर गुरुजी ने देह त्याग कर स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया। उनके द्वारा जलाई गई स्वतन्त्रता ज्योति तथा अन्याय के विरूद्ध लड़ने की भावना आज भी भारतीयों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

गऊ रक्षा के लिए उनका मत था
'यही दे हफ आज्ञा तफरकन गहि खपाऊं,
गऊ घात का दोख जगसों मिटाऊं। उग्रदन्ती

अर्थात् हे मां भवानी, मुझे आशीर्वाद और आदेश दे कि धर्म विरोधी अत्याचारी तुर्कों को चुन-चुनकर समाप्त कर दूँ और इस जगत से गौ हत्या का कलंक मिटा दूँ। वे देवी दुर्गा भवानी के अनन्य उपासक थे। 'खालसा' सुजन से पहले उन्होंने शक्ति यज्ञ का अनुष्ठान किया था। उनकी इच्छा थी कि

सकल जगत मो खालसा पंथ गाजै,
जगै धारम हिन्दफक तफरक दफंद भाजै। -उग्रदन्ती

अर्थात, सारे जगत में खालसा पंथ की गूंज हो, हिन्दू धर्म का उत्थान हो तथा तुर्कों द्वारा पैदा की गयी विपत्तियां समाप्त हों।

खालसा के लक्षण पूछने पर दशमेश गुरु ने एक बार कहा कि खालसा वह है जिसने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर काबू पा लिया हो तथा अभिमान, परस्त्री गमन, पर-निन्दा तथा मिथ्या विश्वासों के भ्रमजाल से सदा दूर रहता हो। जो दीन दुखियों की सेवा व दुर्जन-दुष्टों का विनाश कर निरन्तर श्रद्धापूर्वक प्रभु नाम के जप में लीन रहता हो। खालसा को चरित्रवान व पराक्रमी बनाये रखने के लिए उन्होंने पांच ककार धारण करने के लिए कहा। ये हैं - 1. कृपाण 2. केश 3. कंघा, 4. कच्छा व 5. कड़ा। यह बात सर्व विदित है कि गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज की वीरता, पराक्रम, धैर्य, कर्तव्य निष्ठा, धर्म व राष्ट्र के प्रति समर्पण व त्याग तथा बलिदान की भावना ने ही हिन्दू समाज व भारत को जीवित रखा अन्यथा मुगल शासकों व लुटेरों के हाथों शायद हमारा नामो निशान मिट चुका होता। ऐसे महापुरुष को उनके प्रकाशोत्सव पर शत-शत नमन।

- पता 329 द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली।

आर्य नगरी शाहपुरा में महर्षि दयानन्द सरस्वती

❒ राजेन्द्र प्रसाद सिंह डांगी

शाहपुरा रियासत के 14वें नरेश राजाधिराज नाहर सिंह जी से पूर्व इस राज्य के सभी अधीश्वर वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी थे। लेकिन राजाधिराज नाहर सिंह जी के तार्किक मस्तिष्क को वैष्णव सम्प्रदाय की कल्पित कथाएं सन्तुष्ट न कर सकी और वे पुराणों के गपोड़ों से मुंह मोड सत्य के अन्वेषक बने। उसी समय अचानक चितौड़गढ़ में आर्यसमाज के प्रवर्तक सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शनों को आपको शुभअवसर प्राप्त हुआ। बस यही दिन आपके जीवन प्रवाह को पलटने वाला हुआ। उन दिनों राजाधि राज नाहर सिंह जी महाराणा सज्जन सिंह जी द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में जाना हुआ था। वह दिन 9 अक्टूबर सन् 1938 था। बाद में स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराणा के आग्रह पर उदयपुर चले गए। सन् 1939 में शाहपुरा नरेश ने महर्षि दयानन्द को शाहपुरा लिवाने भेजा। वे चित्तौड़गढ़ तक ही पहुंचे थे। वहां से महर्षि शाहपुरा से भेजे गये कर्मचारियों के साथ शाहपुरा के लिए रवाना हुए और दिनांक 9 मार्च 1939 को शाहपुरा में सुशोभित हुए। स्वामीजी का निवास नगर के बाहर राजकीय उधान रेतीयाबाग में हुआ।

स्वामी जी महाराज के शुभआगमन को राजाधिराज नाहर सिंह ने अपने अहोभाग्य की शुभ सूचना समझी। आप उसी समय स्वयं उनकी सेवा में उपस्थित हुये और विनीत नमस्कार का प्रश्न पूछने लगें 5 दिन तक तो राजाधिराज ने शंका समाधान में ही बिताए। तत्पश्चात् सायं 8 बजे से रात्रि 9 बजे तक प्रतिदिन राजाधि राज एक घण्टा वार्तालाप करते और शेष समय अध्ययन करते। स्वामी जी महाराज राजाधिराज को मनुस्मृति पढ़ाया करते थे। मनुस्मृति पढ़ते समय राजाधिराज ने जब यह श्लोक पढ़ा कि **''क्षत्रियस्य परो धर्मः प्रजानामेव पालनम्''** श्लोक का यह अंश लिखवाया जो आज तक विद्यमान है। इस समय उम्मेदसिंह राजकुमार ही थे, जहां राजाधिराज नाहर सिंह को महर्षि से मनुस्मृति और महाभारत का राज प्रकरण पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां राजकुमार उम्मेद सिंह को भी पंचमहायज्ञ विधि पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। स्वामी जी का समझाने का ढंग बहुत ही अच्छा था। फिर स्वामी जी ने राजाधिराज को योग, दर्शन पढ़ाया और उसकी समाप्ति पर कुछेक भाग वैशेषिक दर्शन के भी अध्ययन कराये। शाहपुरा में जहां आजकल रेतिया बाग पैलेस है, उस समय उस विस्तृत उद्यान में एक छोटी सी कोठी थी, जो आज भी है, उसी को महर्षि के आवास का गौरव प्राप्त हुआ था। स्वामी जी ने उसी कोठी के समीप अपनी देखरेख में एक यज्ञशाला भी बनवाई जहां प्रतिदिन यज्ञ होता था और आज भी होता है। स्वामी जी के द्वारा प्रज्ज्वलित की गई अग्नि आज भी विद्यमान है। स्वामी जी प्रातः काल भ्रमणार्थ बाहर जाया करते थे। किसी किसी दिन राजाधिराज भी वहां जा दर्शन करते और प्राणायाम की विधि सीखते। शाहपुरा में स्वामी जी ने एक होनहार ब्राह्मण युवक को सन्यास देकर दण्ड धारण कराया। उसका नाम ईश्वरानन्द रखा। स्वामी जी ने उसे अध्ययन के लिए प्रयाग भेजा था। कई पौराणिक पण्डितों से स्वामी जी से सम्वाद भी हुए तथा उनके प्रश्नों के वेद सम्मत उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट किए। अन्त में जोधपुर से महाराजा जसवन्त सिंह जी का लिखित निमंत्रण आने पर स्वामी जी 26 मई सन् 1939 शनिवार के दिन सुबह दस बजे शाहपुरा से विदा हुए। इस प्रकार राजाधिराज ने लगभग ढाई माह तक स्वामी जी को शाहपुरा में रोक कर बड़ी श्रद्धा के साथ उनसे मनुस्मृति आदि ग्रन्थ पढ़े, योगाभ्यास भी सीखा तथा धर्म और राजनीति का उपदेश लिया। उसी समय स्वामी जी आदेशानुसार राजाधिराज ने राजमहलों में एक यज्ञ शाला बनवाई तथा प्रतिदिन अग्निहोत्र करने का व्रत लिया और उसे मृत्यु पर्यन्त जारी रखा। महर्षि की प्रेरणा से ही उस समय के वेद भक्त आर्य सज्जनों ने मिलकर सन् 1939 में शाहपुरा में आर्य समाज की स्थापना की। तब से आज तक आर्य समाज बराबर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता चला आ रहा है।

स्वामी जी ने राजाधिराज की दिनचर्या भी उसी समय बना दी थी, जिसके अनुसार ही आप कार्य करते रहे। सच बात तो यह है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशों का राजाधिराज नाहरसिंह जी पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि राजाधिराज अपने को स्वामी दयानन्द सरस्वती का शिष्य घोषित करने में गौरव समझते थे। स्वामी जी के आदेशानुसार राजाधिराज ने स्वदेशी वस्त्र ही पहनना प्रारम्भ कर दिया था। राजाधिराज ने अपनी नगरी का नाम ''आर्य नगरी शाहपुरा'' घोषित किया। विद्यालयों में कक्षा एक से दस तक स्वामी जी के द्वारा बनाये गये पाठ्यक्रमानुसार वैदिक शिक्षा सबको पढ़ना अनिवार्य कर दिया गया, जो देश के आजाद होने तक चलता रहा। आर्य समाज के इतिहास को देखने से पता चलता है कि इस ऋषि भक्त राजाधि राज नाहर सिंह ने ऋषियों के जमाने को यहां लाने के लिए कितना भागीरथ प्रयत्न किया था। इसी प्रभाव के कारण शाहपुरा में अज भी 5 यज्ञ शालाओं में प्रतिदिन यज्ञ होता है तथा लगभग एक सौ परिवार अपने घरों पर दैनिक यज्ञ करते हैं। आर्य समाज के प्रभाव से ही 16वें नरेश श्री सुदर्शन देव ने यहां, ''श्रीमद्दयानन्द महिला शिक्षा केन्द्र'' की स्थापना की, जो आज वैदिक शिक्षा का प्रचार कर रहा है।

– डांगी मोहल्ला, शाहपुरा (भीलवाड़ा), राजस्थान

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **5000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन एक क्रांतिकारी आयोजन

❒ प्रकाश आर्य

किसी भी संस्था का विकास अथवा पतन उसके स्वर्णिम सिद्धान्तों के पालन या उपेक्षा के कारण से होता है। गुरुवर महर्षि दयानन्द और उनके पूर्व आचार्य मनु तथा अनेक विद्वानों ने विवाह सम्बन्धों पर बहुत कुछ लिखा है समाज को मार्ग दर्शन दिया है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश व विशेष कर संस्कार विधि में गृहस्थाश्रम के सम्बन्ध में अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्देश दिए हैं।

गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का आधार है एक श्रेष्ठतम सामाजिक व्यवस्था है व्यक्ति समाज व राष्ट्र निर्माण का स्रोत है।

आचार्य मनु कहते है-गृहस्थ आश्रम एक महत्वपूर्ण आश्रम है। किन्तु गृहस्थ आश्रम में प्रवेश मात्र ही सबकुछ नहीं है गृहस्थाश्रम स्वर्ग है किन्तु बिना समझे बाहरी दिखावे के प्रभाव में किए गए बेमेल विवाह घोर नर्क का कारण भी बन जाते है। इसलिए गृहस्थाश्रम सुखद, सुरक्षित, सांमजस्य से पूर्ण व सुदृढ़ होना पहली आवश्यकता है।

इसलिए जन्मपत्री, अमीर खानदान, कालेज व विद्यालय की पढ़ाई, ऊँचें खानदान को आधार बनाकर होने वाले सम्बन्ध बिखर रहे हैं, वैचारिक मतभेद, मनभेद तक और फिर न्यायालय में तलाक के आवेदन तक पहुंच जाते हैं।

सनातन व्यवस्था में वर्ण व्यवस्था को स्थान दिया जन्मगत जाति को नहीं। इस मानव विचार धाराओं के कारण उपजी जाति प्रथा ने परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को प्रभावित कर मानव जाति को बांट दिया। यह जातिवाद ही आज समाज का सबसे बड़ा कलंक बन कर देश की राजनीति को प्रभावित कर रहा हैं।

आर्य समाज इस कलंक को मिटाना चाहता है गुण, कर्म, और स्वभाव के अनुसार समाज की मान्यता का प्रबल पक्षधर है। किन्तु व्यवस्था व जानकारी के अभाव में आर्यो के आर्यों में आपसी सम्बन्ध लगभग नगण्य से होते हैं आर्यो की विचार धारा के प्रसार सर्वोत्तम उपाय है आर्य परिवारों के युवक युवतियों के वैवाहिक सम्बन्ध जब वर वधू दोनों आर्य परिवार के हों तो सन्तान भी जन्म से उन्हीं संस्कारो में पल्लवित होकर आर्य ही बनेंगे।

आम हिन्दू परिवारों या अन्य सम्प्रदायों में जन्म लेने वाले बच्चों पर जन्म से ही उनके माता के धार्मिक संस्कार होते हैं। इसके अतिरिक्त जिनका विवाह होना है उनकी भी सहमति भी लेना आवश्यक है। जबरदस्ती इच्छा के विरुद्ध थोपे गए वैवाहिक सम्बन्ध सुखद नहीं होते विवादास्पद बन जाते हैं। इसलिए गुण कर्म स्वभाव के अनुसार योग्य आर्य परिवारों के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध हो सके, होने वाले वर वधु एक दूसरे को समझ सकें इस उद्‌देश्य से यह परिचय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सुखद है इसमें बहुत सफलता भी मिल रही है। ध्यान रहे घर में दिए वैदिक संस्कारों के अनुरूप जब जीवन साथी नहीं मिलता है तो वैचारिक टकराव बना रहता है तथा होने वाली सन्तान को पूर्ण वैदिक संस्कार नहीं मिलते और प्राय: वे भटक जाते हैं। आज समाज में जाति-दहेज ऊंचनीच के जन्मपत्री के कारण व्याप्त मापदण्डों का परिणाम है वैवाहिक सम्बन्धों में अनेक बाधाएं है।

तो आइए इस प्रयास के माध्यम से इन सब कुरीतियों व अन्धविश्वासों को जन्मगत जाति के बन्धन को, तोड़कर एक सुखी-श्रेष्ठ सुदृढ़ वैदिक धर्म परिवार निर्माण हेतु विवाह योग्य युवक युवतियां सम्बन्ध कीजिए।

इस हेतु-परिचय सम्मेलन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 द्वारा आयोजित किए जाते है। इसकी सफलता को देखते हुए अगामी पश्चिम सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं। अधिक जानकारी के लिए उपयुक्त पते पर सम्पर्क करें।

– मंत्री सार्वदेशिक आ.प्र.सभा. नई दिल्ली, मो. 09826655117

आर्यों की आत्मा है टंकारा

- राजेन्द्र देव विज

मूलशंकर ने जन्म लिया गांव है वो टंकारा
मूलशंकर ढुँढ़े गुरु जो दिखाये सच्चा शिव
क्योंकि सच्चे शिव का था जो मतवारा
इक दिन गुरु मिल गये मथुरा में
विरजानन्द ने जाना मिल गया शिष्य न्यारा

ज्ञान पाया वेदों का सच्चे शिव को था पा लिया
दयानन्द की पूरी हुई शिक्षा जिसका था वो मतवारा
गुरु ने एक वचन है मांगा जो सबसे न्यारा
भारत मेरा गुलाम है, नहीं लोगों को वेदों का ज्ञान है
वेदों का ज्ञान वांटो अब यही है कर्त्तव्य तुम्हारा
चले दयानन्द दूर करने को अन्धियारा
तो धन्य हो गया था तब टंकारा

ज्ञान वांटा समाज सुधारा पाखण्डों को दूर किया
नारी शिक्षा से हुई शिक्षित दुर हुआ था वो अन्धकारा
चारों तरफ आजादी की माँग थी क्योंकि गुलाम था टंकारा
आखिर इक दिन मिली आजादी तो झुम उठा था टंकारा

लेकिन फिर क्यों घिर गया है, गुलामी में फिर से टंकारा
रिश्वत, भ्रुण-हत्या, नशाखोरी खा जाएगी मेरा टंकारा
पथ भ्रष्ट नेता कहीं फिर से न गुलाम कर दें मेरा टंकारा

जागो समाज के आर्यो, जागो नहीं तो फिर गुलाम होगा मेरा टंकारा
वेद यज्ञ गायत्री को अपनाना होगा तभी तो वच पाएगा मेरा टंकारा
स्वदेशी अपनाना होगा वेदों का ज्ञान बढ़ाना होगा तभी तो सजेगा टंकारा

हम सबका तीर्थ है, टंकारा, हम सबका शिरोधरी है टंकारा
हम सबका अपना घर है टंकारा, हम सबका दिल है टंकारा
आत्मीय ज्ञान से जाना है हमने इसे
क्योंकि आर्यो की आत्मा है टंकारा।

– 49, कालिया कॉलोनी, अमृतसर रोड, वाईपास, जालन्धर शहर

हे आत्मन्! सावधान

❒ रमेश चन्द्र पाहूजा

न जाने क्यों इस भौतिक जगत की चकाचौंध, भागदौड़, कोलाहल के मध्य रहते हुए भी, कुछ खाली-खाली सा, कुछ अधूरा सा लगता है। ईश्वर की महती कृपा है, घर है, सुन्दर परिवार है, जीवन-रूपी यात्रा के लिए सब सुख-साधन भी हैं परन्तु फिर भी आत्मा को एकान्त की तालाश है। ऐसा एकान्त जहाँ मन के संकल्प-विकल्प की गति धीमी पढ़ जाये, जहां संकल्प-विकल्प को एक दिशा मिल जाये। आईए, दूर कही पहाड़ों की वादियों में खो जाते हैं। चारों ओर बादल ही बादल हैं। जैसे ही शीतल पवन का झोंका आता है, बादल की एक घटा शरीर को छू जाती है, ऐसा आभास होता है कि परमपिता परमात्मा ने अपना सारा प्यार, स्नेह ही उँडेल दिया हो। आनन्द की एक अनुभूति हो उठती है।

इन्हीं वादियों में, एक ऋषि का आश्रम भी है। आईये, यहाँ देखते हैं क्या हो रहा है। प्रातः काल की शुभ वेला में, ऋषिवर अपने ब्रह्मचारियों के साथ मिलकर ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ सम्पन्न कर चुके हैं। अग्निहोत्र की सुरभि चारों ओर फैली हुई है। ब्रह्मचारीगण गऊओं को दुह कर दुग्धपान कर चुके हैं। इतने में ऋषिवर एक ब्रह्मचारी को आदेश देते हैं। हे गोपाल! तुम इन गऊओं को अपने निरीक्षण में खोलो, उनकी गिनती करो और वन की ओर प्रस्थान करो। इनको अपनी देख-रेख में ही गति प्रदान करना। ध्यान रखना ये गऊएँ आपस में ही लड़ लहुलुहान न हो जायें। मिल कर रहें, मिल कर घास चरें। ये कहीं दूर घने जंगलों में न निकल जायें। ऐसा न हो कोई शेर इनपर आ झपटे। ऐसा न हो कि कोई गऊ पहाड़ से नीचे गिर जाए और अपनी टाँगे तुड़वा बैठे। सावधान! ये गऊएँ कहीं विषैली घास का सेवन न कर लें। प्रातः से ले कर लौटने तक इनपर कड़ी नजर रखना। वापिस लौटने के समय इनकी गिनती कर लेना और फिर अपने ही संरक्षण में हाँक कर सुरक्षित आश्रम में वापिस ले आना।

आईये, अब इस चित्रण के आध्यात्मिक पक्ष पर भी चिन्तन-मनन करते हैं। ऋग्वेद में एक बहुत ही सुन्दर, सारगर्भित मन्त्र आता है:

ओ३म् यत् नियानं, न्ययनं, संज्ञानं यत् प्रयाणम्।
आवर्तनं, निवर्तनं, यो गोपा अपि तम् हुवे।। (ऋग्वेद)।।

इस मन्त्र में आत्मा की उपमा गोपाल से की गई है, शरीर की तुलना गऊशाला से और पाँचों ज्ञान-इन्द्रियों, मन और बुद्धि को गऊएँ कह कर पुकारा गया है। वेदमाता के माध्यम से परमात्मा आदेश दे रहे हैं, हे आत्मन्, हे गोपाल! सावधान! ध्यान रहे कि प्रातःकाल जागने के समय से लेकर रात्रिकाल में निद्रा की गोद में जाने तक, तुम्हारी इन्द्रियों के सारे क्रिया-कलाप तुम्हारे ही निरक्षण और संरक्षण में हों। प्रातः काल का शुभारम्भ प्रभात-वन्दना के मन्त्रों के क्षरा ही हो।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्र हवामहे, प्रातर्मित्रावरूणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिम्, प्रातः सोममुत रूद्रं हुवेम।।

प्रातः काल की शुभवेला में प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप सब ऐश्वर्यो के दाता, मित्र, वरूण स्वरूप और सर्वव्यापक प्रभु का हम आह्वान करते हैं। प्रातः काल स्मरणीय, सबका पालन पोषण करने वाले, वेद और ब्रह्माण्ड के अधिपति, शान्त स्वरूप और पापियों को रूलाने वाले उसे ईश्वर को हम पुकारते हैं। इस प्रकार ब्रह्मयज्ञ से आरम्भ कर, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ हमारी दिनचर्या के अभिन्न अंग हो। हे गोपाल! इन सब इन्द्रियों रूपी गऊओं के सारे कार्य तुम्हारी ही देख-रेख में हो। अपने जीवन रूपी यज्ञ में ये इन्द्रियाँ, ये सप्त होता, सुन्दर, पवित्र, सुगन्धित, पौष्टिक और हितकारी आहुतियाँ ही डालें ताकि सारे वातावरण में सुरभि ही सुरभि फैल जाए। ये तेरी ज्ञान-इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि तेरे वश में हों और उनका आपस में भी ताल-मेल हो। जैसे तुम आदेश दो, बुद्धि उसी के अनुसर अनुसरण करे, मन भी अपनी मनमानी न करे और सदैव शिवसंकल्प वाला हो। **अक्षभिः भद्रं पश्येमः,** ध्यान रहे, ये आँखे सदा प्रकृति की सुन्दरता को देखें। ऐसा न हो शारीरिक सुन्दरता का शिकार हो अपने जीवन को गँवा दे। **कर्णेभिः भद्रं श्रृणुयामः,** ये कान, प्रकृति के मधुर संगीत, वेद-वाणी, ऋषि-मुनि आदि के शुभ-वचनों को ही सुनें न कि अभद्र, अश्लीी संगीत, निन्दा-चुगली आदि को। यह वाणी सदैव प्रभु के गुणगान करे। त्वचा भी उसी के स्पर्श का अनुभव करे। ये सभी इन्द्रियाँ, ये गऊएँ कभी विषैली घास का सेवन न करें। सन्त लोग भी यही फरमाते हैं: **खाओ-पियो छको मत, बोलो चालो बको मत, देखो-भालो तको मत।**

स्वामी दयानन्द जी की भी यही शिक्षा है: **किसी भी पराई स्त्री को भरपूर दृष्टि से मत देखो।** हे आत्मन्, सायंकाल होते ही इन गऊओं को अपने निरीक्षण में सुरक्षित घर ले आना। यह न हो कि बुरी संगत में पढ़ शराब-खाने, जुए-खाने की ओर भटक जाएं। इतना ही नहीं रात्रि को सोने से पूर्व भी शयन-विनय के मन्त्रों-रूपी लोरी द्वारा ही सुलाना। प्रातः काल से रात्रि तक ही नहीं, जन्म से लेकर मृत्यु तक इन पर नियन्त्रण रखना, न जाने कब मति मारी जाए। पंजाबी भाषा में एक ऐसी ही कहावत है:

दूध फिटदियाँ, बुद्धी फिटदियाँ देर नहीं लगदी। एक बार चूक हुई नहीं कि जीवन की सारी कमाई मिट्टी में मिल गई। सन्त-महात्मा एक बोध-कथा द्वारा हमारा मार्ग-दर्शन करते हैं:

एक महात्मा नित्य-प्रति प्रातःकाल नदी पर स्नान करने जाते। आश्रम से नदी के मार्ग में एक वैश्या का घर आता था। स्नान करने के पश्चात जब वह आश्रम की ओर लौटते तो कानों में वैश्या का आवाज सुन पढ़ती, "ओ बाबा, क्या तुम्हारी दाढ़ी के बाल ज्यादा सफेद हैं या मेरे कुत्ते के बाल? महात्मा बिना नजर उठाये, मन्द-मन्द मुस्कराते, आश्रम की ओर बढ़ जाते। यह क्रम बहुत दिनों तक इसी प्रकार से चलता रहा। एक बार महात्मा बीमार पड़ गये। ईश्वर की न्यायवस्था के अन्तर्गत वह मृत्यु के द्वार पर पहुँच गये। उन्होंने अपने प्रियतय शिष्य को बुलाया और आदेश दिया, "जाओ! वैश्या को बुला लाओ।" शिष्य को बहुत आश्चर्य और दुःख भी हुआ कि ऐसी पवित्र आत्मा को जीवन की अन्तिम घड़ियों में यह क्या सूझ पढ़ा? परन्तु आदेश का पालन करते हुए वह वैश्या को आश्रम में बुला लाया। वैश्या की ओर देख, उस महात्मा ने कहा, बेटी, तेरे प्रश्न का उत्तर देने का समय आ गया है। अब मैं निश्चय-पूर्वक कह सकता हूँ कि मेरी दाढ़ी के बाल तुम्हारे कुत्ते के बालों से अधिक सफेद हैं। इतना कहने के बाद ईश्वर का ध्यान करते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिये। उस सन्त के इन शब्दों ने, वैश्या के जीवन को एक नई दिशा दे दी।

धन्य हैं हमारे वेदों वाले ऋषि, धन्य हैं हमारे स्वामी दयानन्द जी का ब्रह्मचर्य, उनकी कठोर तपस्या, उनका ईश्वर के प्रति समर्पण। जीवन में कितने ही प्रलोभन आये, उनके ब्रह्मचर्य को खंडित करने के लिए षडयन्त्र रचे गय, कितनी ही बाधायें आई किनतु वह पुण्य आत्मा कभी विचलित नहीं हुई, कभी डगमगाई नहीं। कैसा अद्‌भुत था उनका अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण।

-541-एल, मॉडल टाऊन, यमुना नगर

हे गोपाल! तुम इन ज्ञान-इन्द्रियों रूपी गऊओं को कभी स्वतन्त्र मत छोड़ो, स्वच्छन्द मत छोड़ो ऐसा न हो कि ये हरी भरी घास को छोड़ कर विषैली घास खाने लगें। ये चक्षु मानसिक सुन्दरता को भूल कर शारीरिक सुन्दरता के पीछे भागने लगें। ये कान, श्रोत, विद्वानों के सत् वचनों को छोड़ हार-सिंगार, अश्लील गानों की धुन सुनने के लिए लालायित हो उठें। न जाने कब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी व्याघ्र इन पर आ झपटें। एक मनुष्य की दशा तो बहुत ही दयनीय है क्योंकि यह एक नहीं पाँच-पाँच विषयों का दास है, रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का। राजा भर्तृहरि वैराग्य-शतक में एक बहुत ही सुन्दर चित्रण करते हैं:

कुरङ्ग-मातङ्ग-भृङ्ग, मीना हता पञ्चभिरेव पञ्च।
एकः प्रमादी सः कथं न हन्यात्, यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥
(राजा भर्तृहरि कृत वैराग्य शतक)

अर्थात् हिरण, हाथी, पतंगा, भंवरा और मच्छली एक-एक विषय के दास हैं जिस कारण उन्हें मृत्यु का शिकार होना पड़ता है। परन्तु एक प्रमादी मनुष्य तो पाँचों विषयों का यानि रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का दास है, इसलिए उसकी दशा तो बहुत ही दयनीय है। जब तक आत्मा रूपी गोपाल शक्तिशाली होता है, आत्मा का आदेश अन्तःकरण और सब ज्ञान-इन्द्रियाँ मानती है और व्यक्ति अपने लक्ष्य को नहीं भूलता। परन्तु कभी-कभी पूर्व-जन्मों के संस्कारों के फलस्वरूप, आजकल के विषैले, दूषित वातावरण के कारण, मन और ज्ञान-इन्द्रियाँ अपनी मनमानी करने लगती हैं। आत्मा चाहते हुए भी, कुछ कर नहीं पाती, असहाय सी हो जाती है। ऐसे में एक ही उपाय रह जाता है और वह है प्रभु की शरण। प्रभु के प्रति समर्पित होते हुए आत्मा पुकार उठती है।

ओ३म् पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे।
अथो अरिष्टतातंये॥ (अथर्ववेद)

हे पवित्रता के अनुपम, अद्वितीय, दिव्य स्रोत प्रभो। मुझे पवित्र कर दो, निर्मल कर दो जिससे मैं पवित्र होकर सच्चा क्रतुमान बन सकूँ यानि मेरी प्रज्ञा और कर्म, मेरी बुद्धि और मेरा कार्य दोनों पवित्र हो जायें। जैसे प्रज्जवलित अग्नि में ईंधन डालने से, सारी की सारी ईंधन भस्मासात हो जाती है, मुझमें भी ऐसी ज्ञान-अग्नि प्रज्जवलित कर दें कि मेरे सब अशुभ विचार, दुष्कर्म, पाप, कर्म, उस ज्ञान-अग्नि में जलकर भस्म हो जायें, नष्ट हो जायें। झरने की भांति भीतर से ही ज्ञान फूटने लगे, ध्यान पकने लगे।

हे पवमानः! हे प्रभो ऐसी कृपा करो कि मैं आपके द्वारा पवित्र हो, मानसिक और आत्मिक बल को प्राप्त कर, अपनी इन्द्रियों का स्वामी बन जाऊँ। आपके आनन्द की अनुभूति कर सकूँ।

ओ३म् आनन्दम्, ओ३म् आनन्दम्। – 541-एल, मॉडल टाऊन, दिल्ली

टंकारा यात्रा 2014

आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो टंकारा, पोरबंदर, सोमनाथ, द्वारकापुरीधाम

टंकारा यात्रा अवधि 7 दिनः- धर्मप्रेमी बहनों व भाइयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा यात्रा एवं द्वारकापुरीधाम तीर्थयात्रा का सुनहरी अवसर। 25.02.2014 को नई दिल्ली स्टेशन से चलेंगे व 04.03.2014 को वापस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा लें, जिससे कि रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके। इस यात्रा में बस-रेल व आने-जाने का सभी खर्च शामिल है।

कार्यक्रम व दर्शनीय स्थल : - 25.02.2014 नई दिल्ली से राजधानी एक्सप्रैस द्वारा अहमदाबाद के लिए प्रस्थान। - 26.02.2014 अहमदाबाद से राजकोट व टंकारा के लिए प्रस्थान यहां पर ट्रेन द्वितीय श्रेणी की होगी व रात्रि विश्राम टंकारा। - 27.02.2014 शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। - 28.02.2014 टंकारा से सोमनाथ का लाईट एण्ड साउंड शो, जहां श्री कृष्ण जी को तीर लगा था व रात्रि विश्राम सोमनाथ। - 01.03.2014 सोमनाथ से द्वारका के लिए प्रस्थान भारत के चार पवित्र नगरों में से एक गोमती गंगा, नागेश्वर, द्वारका धीश मन्दिर, श्रीकृष्ण महल व भेंट द्वारका, गोपी तालाब। - 02.03.2014 द्वारका से पोरबन्दर गांधीजी का जन्म स्थान, तारा मंडल, आर्य गुरुकुल, भारत माता मन्दिर व रात्रि 9.00 बजे ट्रेन द्वारा अहमदाबाद के लिए प्रस्थान। - 03.03.2014 अहमदाबाद प्रातः पहुंच कर शाम को 5.00 बजे दिल्ली की ट्रेन पकड़नी है, इसलिए यहां पर होटल की व्यवस्था नहीं की है। इसलिए सभी लोग वेटिंग रूप में फ्रेश होकर व अहमदाबाद भ्रमण करके वापस ट्रेन द्वारा दिल्ली के लिए प्रस्थान।

नोटः- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क है, यहां पर सभी यात्रियों को हाल में जमीन पर दो या तीन दिन सोना होता है इसलिए आप अपने साथ एक पतला कम्बल, चादर अपने साथ अवश्य रखें।

यात्री किराया-स्लीपर क्लास : 9300/- 3 ए.सी. 10700/-, 2 ए.सी. 12600/-, ❐ सीनियर सिटिजन : 8900/-, 3 ए.सी. 9900/-, 2 ए.सी. 11500/-, ❐ महिला सीनियर सिटीजन 8800/-, 3 ए.सी. 9700/-, 2 ए.सी. 11200/-

यात्रा नियम : ❐ हमारी यात्रा में अकेली व वृद्ध महिलाएं भी यात्रा कर सकती हैं, क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। ❐ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक/ड्राफ्ट **Arya Travel** अथवा विजय सचदेवा के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। ❐ इन यात्राओं में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेंगे। इस यात्रा में रहने व खाने की व्यवस्था **Hotel, Tourist Class, Non-Star, Neat & Clean** होगी। इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। ❐ सीट बुक कराने के लिए रेल के यात्री जगन्नाथ एवं द्वारकाधीश के लिए 8000/- रूपये अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें। इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिक रदद् करवाता है तो 3000/- रूपये प्रतिव्यक्ति कटवाने होंगे व यात्रा से चार दिन पहले कैंसिल कराने पर टोटल किराये का 60 प्रतिशत कट जाएगा। ❐ इन यात्राओं में जो यात्री अन्त में टिकट कैन्सिल करवाते है उनकी जानकारी के लिए होटल व बस की बुकिंग हो चुकी होती है। इसलिए अन्त में ज्यादा रुपये कटते हैं।

आर्या ट्रैवेल्स

अमित सचदेवा (मो. 9868095401), **विजय सचदेवा** (सुपुत्र स्व. श्री श्यामदास सचदेवा), 2613/9, चूना मंडी, पहाड़गंज, दिल्ली-55
फोन : 011-23588482, मो. 09811171166

पत्र दर्पण

''टंकारा का अजय''

सूरज की निकली किरणों से ईक संदेशा आया है,
चन्दा की शीतल आभा ने भी कदम बढ़ाया है,
आसमान से भीगी-भीगी बून्दों ने मन हर्षाया है,
धरती पर अजय ने नाम कमाया है।

मार्च 1997 में जो पौधा अजय ने लगाया है,
टंकारा समाचार का 200वां अंक देख मन हर्षाया है,
टंकारा समाचार देश के कोने-कोने पे छाया है,
अजय टंकारा का पारस बन कर आया है।

पत्रकारिता के मर्मज्ञ अजय का कोई सानी नहीं,
सम्पादन में उत्कृष्ट अजय सा कोई ज्ञानी नहीं,
टंकारा समाचार के आगे मांगता कोई पानी नहीं,
अजय की दूरदर्शिता कभी किसी ने पहचानी नहीं।

धर्म की उच्चकोटी की सामग्री इसमें होती है,
दीर्घकालीन अनुभव की भी छाया इसमें होती है,
ऋषि के पूरे जीवन का घटनीय इसमें होती हैं,
सभी आर्य समाजों की जानकारी इसमें होती है।

आओ सब मिलकर अजय का साथ निभायें हम,
टंकारा समाचार को देश के हर कोने में पहुचायें हम,
ऋषि के इस अभियान को तीव्र गति से अपनायें हम,
हर घर में आर्यत्व और ओ३म् का दीप जलायें हम,

– ऋषि राम कुमार, 246/4, माडल टाऊन,
गुड़गांव (हरियाणा)-122001

निष्ठा और समर्पण को सलाम

आशा है ईश कृपा से स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

आप भी 'टंकारा समाचार' के प्रत्येक अंक के माध्यम से घर बैठे पूरे टंकारा के दर्शन कराते रहते हैं। दो शतकों से यह पत्रिका जिस गरिमा को प्राप्त है उसमें 'अजय टंकारावाला' का भी विशेष योगदान रहा है। आप के जीवन में टंकारा इतना रच-रम गया है कि आप ने तो अपना तखल्लस (उपनाम) ही 'टंकारावाला' रख लिया। आपकी इस निष्ठा और समर्पण की भावना को हम सलाम करते हैं।

यद्यपि प्रतिवर्ष फरवरी मास में टंकारा यात्रा का प्रोग्राम बनाता हूँ परन्तु न जाने क्यों वह कार्यान्वित नहीं हो पाता। फिर भी पत्रिका के माध्यम से उस पावन धरती की सुहास का लाभ तो मिल ही जाता है क्योंकि उसमें प्रकाशित लेख उच्च स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक होते हैं।

प्रभु से प्रार्थना है कि आपको इतनी शक्ति दे कि इस दायित्व को आप पूरी तन्मयता से निभाते रहें। हमारी मंगल-कामनाएँ सदा आपके साथ हैं। धर्मवीर सेठी, प्रबन्ध सम्पादक 'नीति'
भारतीय विकास परिषद् केन्द्रीय कार्यालय, बी.डी. ब्लॉक,
पीतमपुरा, दिल्ली-110034

आर्ष परम्परा का भक्त-अजय

महर्षि देव दयानन्द आर्ष परम्परा के उन्नायक थे। अत: समाज ने दयानन्द को 'वेदों वाला' कहकर अपना सम्मान प्रकट किया है। ''वेदों वाला'' कहते ही महर्षि की प्रतिभा पूरित तेजो दीप्त प्रतिमा सामने उभर कर आती है। इसी पंक्ति में अजय का यौवन आर्यत्व की महनीय परम्परा में बीता। प्रतिभावान पिता के संरक्षण में उन्होंने स्वयं को सुसंस्कृत किया है।

उनके शुभारम्भ का क्षेत्र ''टंकारा'' है, अपनी अनिर्वचनीय अद्याटन सेवा के कारण आर्य जगत् ने उन्हें ''टंकारा वाला'' नाम से पुकारा। टंकारा वाला कहते ही श्री अजय जी का व्यक्तित्व झलकता है।

इसी शान्त, बीहड़, एकाकी प्रदेश में ही महर्षि ने वैदिक संस्कृति के पक्षधर सत्य की अनवरत खोज में स्वयं को आहूत किया था। और इस खोज में महर्षि ने आडम्बरों में लीन निरर्थक क्रियाकलापों की तीव्र भर्त्सना की है। क्योंकि जीवन भर महर्षि का प्रखर उद्देश्य था पूर्णत्व से पुष्ट सत्य निरुपण से परम पिता परमेश्वर के दिव्य स्वरूप का आख्यान।

'टंकारा समाचार'' के सम्पादक श्री अजय अपनी ललित लेखनी से वैदिक संस्कृति के विविध पक्षों की सार्थक चर्चा कर रहे हैं। **'ऋतं तपः, सत्यं तपः, दम तपः, स्वाध्याय तपः''** (तैतिरीय उपनिषद् 10.8) स्वयं को परिष्कृत कर, विभिन्न ज्ञान तत्वों को समझकर कर वस्तु स्थिति का श्रेष्ठ निरूपण श्री अजय का लक्ष्य है।

''सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु'' मित्रता के अबाध बन्धन में हमारी प्रीति का संचार हो। हमारी वैदिक संस्कृति उच्चरित करती है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्''- कितना मधुर परिवार वसुधा को सजा रहा है। ऋषि की मान्यता है ''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' सभी को अपना समझो कितना उदात्त, ग्रहणीय चिन्तन है। श्री अजय जी ने इस गुण को स्वीकार किया है। श्री अजय सहगल जी सभी के अपने हैं, आर्य समाज का प्रत्येक घटक उन्हें तहे दिल से अपनाता है, सम्मानित करता है। ''टंकारा समाचार'' ने अभी अपनी यात्रा शुरु की है। ''भद्रं इच्छन्त ऋषयः'' श्री अजय इसे प्रतिबद्ध करने में जुड़े हुए हैं। अथर्ववेद की पंक्ति से अभी इतना ही- **'उद्यानं ते पुरुष न अवयानं, जीवातु ते दक्षतातिं कृणोमि''**। हे पुरुष (अजय जी) आप सर्वदा अपना कर्तव्य भलीभांति सम्पन्न करो। प्रभु का आशीर्वाद साथ है। उन्नति आपकी प्रतीक्षा में रत है। – श्री कण्णन, चैन्नई, मो. 9841094455

चुनाव समाचार

आर्य समाज, सिविल लाईन कटनी, मध्य प्रदेश
प्रधान- श्री अश्विनी सहगल **मन्त्री**- श्री योगेश मिश्रा
कोषाध्यक्ष- श्री संदीप मिनोचा

आर्य समाज मन्दिर फेस-6, मोहाली, पंजाब
प्रधान- श्री निरेन्द्र गुप्ता **मन्त्री**- श्री विजय आर्य/श्री कोडा जी
कोषाध्यक्ष- श्री राजेन्द्र गुप्ता

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली
प्रधान- श्री राम नाथ सहगल **मन्त्री**- श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा
कोषाध्यक्ष- श्री सुरेन्द्र गुप्त

મહર્ષિ દયાનન્દ દ્વારા પ્રતિપાદિત સૃષ્ટિવિજ્ઞાન

પં. રમેશ ચન્દ્ર મહેતા 'ટંકારામિત્ર'

મહર્ષિ દયાનન્દજીએ સત્યાર્થપ્રકાશના આઠમા સમ્મુલ્લાસમાં કેટલાક એવા પ્રશ્નોનુ વેદશાસ્ત્રના આધારે યુક્તિ અને તર્કસંગત સમાધાન આપ્યું છે જે ચિરકાળ સુધી માનવના મસ્તિષ્કને ઉદ્વેલિત કરી રહ્યું છે - જેવું કે - આપણે આપણી ચારેબાજુએ જે સૃષ્ટિને જોઈ રહ્યા છીએ, એ શું છે? એની રચના ક્યારે થઈ? એની રચના કેવી રીતે થઈ? કોણે એની રચના કરી? એક સુનિશ્ચિત ક્રમમાં આ શંકાઓના સમાધાનની વ્યાખ્યા આવી રીતે કરે છેઃ-

સૃષ્ટિ શું છે? 'સૃજ્યતે વા સા સૃષ્ટિ' અર્થાત્ જેનું સર્જન થયેલું છે અથવા થઈ રહ્યું છે એ સૃષ્ટિ છે. આ પરિભાષાને અન્તર્ગત પ્રાણિઓના શરીર, પહાડ, નદિઓ, વનસ્પતિ, ધાતુઓ વિગેરે સમસ્ત પદાર્થોનો સમાવેશ થઈ જાય છે. એમાં કંઈ પણ સ્થિર નથી. પ્રત્યેક પદાર્થ ઉત્પન્ન થાય છે, વધે છે અને છેવટે કાળની ગતિમાં સમાઈ જાય છે.

સૃષ્ટિનું પ્રયોજનઃ- લૌકિક વ્યવહારમાં પણ આપણે જોઈએ છીએ કે કોઈપણ વસ્તુનું નિર્માણ પ્રયોજન વગર કરવામાં નથી આવતું. પ્રત્યેક વસ્તુ કોઈને કોઈ ઉપયોગ માટે બનાવવામાં આવે છે. તો પછી સૃષ્ટિનો પણ કોઈને કોઈ ઉપયોગ તો હોવો જ જોઈએ. ઋષિ દયાનન્દ સંસારમાં ૩ અનાદિ સત્તાઓ માને છે. એક ઈશ્વર કે જે સૃષ્ટિનો કર્ત્તા, ધારણ કરતા અને સંહરતા છે. બીજી સત્તા અસંખ્ય જીવાત્માઓ છે. ઈશ્વર અને જીવ બંને સત્તાઓ ચેતન છે, ઈશ્વર સર્વશક્તિમાન છે, જીવાત્મા અલ્પશક્તિમાન છે. ત્રીજી સત્તા પ્રકૃતિ છે જે જડ છ. આ ત્રણે સત્તાઓ પ્રત્યેક કાળમાં હતી, છે અને સદૈવ રહેશે. એટલે સૃષ્ટિ આજ સત્તાઓમાંથી કોઈ એક સત્તાના ઉપયોગ માટે હોવી જોઈએ. આ ત્રણેમાં પરમાત્મા તો પૂર્ણકામ છે, એટલે એમને કોઈ આવશ્યકતા હોતી જ નથી. પ્રકૃતિ જડ છે. જડ પદાર્થની પણ કોઈ ઇચ્છા હોતી નથી. એટલે સિદ્ધ થાય છે કે આ સૃષ્ટિની રચના જીવાત્માઓના પ્રયોજન માટે જ કરવામાં આવી છે કારણ કે જીવાત્માઓ અલ્પશક્તિ અને ચેતન છે. એટલે જીવાત્માઓના ભોગ અને અપવર્ગ (મોક્ષ) પ્રાપ્તિ માટે પરમાત્માએ આ સૃષ્ટિની રચના કરી છે. કેટલાક લોકો પુછે છે કે આ સૃષ્ટિની રચના પરમાત્માએ જ કરી છે એનું પ્રમાણ શું છે? આપણે જોઈએ છીએ કે સૃષ્ટિની રચના જ્ઞાનપૂર્વક, વ્યવસ્થામૂલક છે, આકસ્મિક નથી. વિશ્વના અનેકાનેક આકાર, ગ્રહ-નક્ષત્રો,ની અગણિત સંખ્યા એના પર શાસન કરવાવાળા નિયમોના વૈવિધ્યોને જોઈને કોઈ પણ એની સત્તાનો સ્વીકાર કર્યા વિના રહી ન સકે. અરસ્તુએ પોતાના પુસ્તક Book of Knowledgeમાં લખ્યું છે "Things did not happen by chance, law regained everywhere." પરમાત્માના અનુસાસનથી શૂન્ય વિશ્વમાં વ્યવસ્થાની કલ્પના કરવી એ એવું જ છે જેવું કોઈ બગીચાના સૌન્દર્યને જોઈને માળીના અસ્તિત્ત્વને નકારી દેવું.

સૃષ્ટિની રચના પૂર્વેની અવસ્થાઃ- સૃષ્ટિની રચના પૂર્વે માત્ર એક પરમાત્મા જ જાગતા રહે છે, જેનું જ્ઞાન સદૈવ કાયમ રહે છે કે સૃષ્ટિ રચનાનો પ્રારમ્ભ ક્યારે કરવામાં આવશે. જીવાત્માઓ એક ગાઢ નિદ્રા (Coma) જેવી અવસ્થામાં હોય છે તથા પ્રકૃતિના પરમાણુ સત્ત્વ, રજસ, તમસ્ પોતાની અવસ્થામાં રહે છે, અર્થાત્ એ પરમાણુઓમાં કોઈ જાતના હલન-ચલનના સંકેત નથા મળતા. આ અવસ્થાનું વર્ણન ઋગ્વેદના નાસદીય સૂક્તમાં જોવા મળે છે -

ન મૃત્યુરાસીદમૃતં ન તર્હિ ન
રાત્ર્યા અહ્ન આસીત્ પ્રકેતઃ।
અનાદિવાતં સ્વધયા તદેકં
તસ્માદ્ધાન્યન્ન પરઃ કિંચનાસ।। ૧૦.૧૨૯.૨

એ સમયે મૃત્યુ નહોતુ, એ સમયે અમરત્ત્વ પણ નહોતું. રાત અને દિવસના વિભાગનું કોઈ જ્ઞાન નહોતું. એ સમયે એ એક આત્મ તત્ત્વ એક પ્રાણ રૂપમાં હતું.

સૃષ્ટિ રચનાનો પ્રારમ્ભઃ- પ્રલય કાળ અર્થાત્ સૃષ્ટિ રચના પહેલા આ જગત્ પ્રકૃતિના અસંખ્ય પરમાણુઓથી આચ્છાદિત એક ગહન શૂન્ય તથા અન્ધકારની સ્થિતિમાં હતું. પ્રકૃતિના આ પરમાણુ જ એ મૂળ તત્ત્વ છે જેનાથી આ સમસ્ત સૃષ્ટિના પદાર્થોની રચના થાય છે. પ્રલયકાળના પુરા થવા પર ચેતન શક્તિ પરમાત્માની પ્રેરણાથી ત્રિગુણ મૂળ તત્ત્વોમાં હલચલનો પ્રારમ્ભ થાય છે. આ હલચલનું પહેલું પરિણામ મહત્ (અહંકાર અથવા બુદ્ધિ) છે. આ મહત્ તત્ત્વમાંથી અગિયાર ઇન્દ્રિઓ તથા પાંચ સૂક્ષ્મ ભુતોનું નિર્માણ થાય છે. અગિયાર ઇન્દ્રિઓમાં પાંચ જ્ઞાનેન્દ્રિય, પાંચ કર્મેન્દ્રિય તથા એક મન છે. આંખ, કાન, નાક,

જીભ અને ત્વચા આ પાંચ જ્ઞાનેન્દ્રિયો છે. હાથ, પગ, વાણી, તથા પગ અને મળ-મૂત્ર - આ પાંચ કર્મેન્દ્રિઓ છે. મન આન્તર ઇન્દ્રિય છે જેનો સંબંધ બંને પ્રકારની ઇન્દ્રિઓ સાથે છે. પૃથિવી, જળ, અગ્નિ, વાયુ, આકાશના અણુ સૂક્ષ્મ ભૂત કે તન્માત્ર કહેવાય છે. આમાંથી જ સ્થૂળ ભૂતોની ઉત્પત્તિ થાય છે. ભૂતોની સૂક્ષ્મ અવસ્થાને એટલે કે અણુરૂપનો ઇન્દ્રઓથી અનુભવ થઈ શકતો નથી, પરન્તુ આ અણુ જ્યારે પૃથિવી, જળ, વાયુ, અગ્નિ તથા આકાશ આદિ સ્થૂળ ભૂતોના રૂપમાં પરિવર્તિત થઈ જાય છે ત્યારે એ ઇન્દ્રિય ગ્રાહ્ય બની જાય છે. સ્થૂળભૂતોની રચનામાં પહેલા આકાશ (ખાલી સ્થાન) બને છે, આકાશ પછી વાયુ, વાયુ પછી અગ્નિ, અગ્નિ પછી જળ અને જળ પછી પૃથિવી ઉત્પન્ન થાય છે. આકાશનો મુખ્ય ગુણ શબ્દ, વાયુનો મુખ્ય ગુણ સ્પર્શ, અગ્નિનો મુખ્ય ગુણ તેજ, જળનો મુખ્ય ગુણ શીતળતા અને પૃથિવીનો મુખ્ય ગુણ ગંધ છે. પૃથિવીમાંથી અનન ઉત્પન્ન થાય છે, અન્નમાંથી ઓષધિઓ, ઓષધિઓમાંથી બધાં પાણિઓના શરીર બને છે. શરીરોનું નિર્માણ થઈ ગયા પછી ઈશ્વરીય વ્યવસ્થામાં એનામાં એના પૂર્વ જન્મોના કર્માનુસાર જીવાત્માઓ પ્રવેશ કરે છે. વૈશેષિક દર્શન પ્રમાણે શરીર, વાણી અને મનથી જે જ્ઞાનપૂર્વક ચેષ્ટાઓ કરે છે એ કર્મ છે. જન્મ જન્માન્તરોમાં કરેલા શુભ કર્મથી મનુષ્ય યોનિ તથા અશુભ કર્મોથી અશુભતર તથા અશુભતમ કર્માનુસાર ક્રમશઃ પશુ, કીડા, પતંગિયા તથા વનસ્પતિ આદીની યોનિયો મળે છે. એમાં યોગદર્શનનું પણ પ્રમાણ છે - સતિ મૂલે તદ્વિપાકો ૨।૧૩

ઈશ્વરીય વ્યવસ્થાનુસાર સૃષ્ટિના આરમ્ભમાં યુવા શરીરનું જ નિર્માણ થયું હતું જેમાં જીવાત્માઓએ પ્રવેશ કર્યો હતો. પછી જ્ઞાનપૂર્વક મૈથુની સૃષ્ટિનો પ્રારમ્ભ થાય છે. પ્રત્યેક સૃષ્ટિના પ્રારમ્ભમાં અગ્નિ, વાયુ, આદિત્ય અને અંગિરા ઋષિઓ અયોનિજ જ જન્મે છે. આ ઋષિઓ દ્વારા સંસારને વેદનું જ્ઞાન આપવામાં આવે છે. આજ જ્ઞાન શિષ્ય પરમ્પરા દ્વારા પેઢી દર પેઢી વિસ્તાર પામીને વર્તમાન સમય સુધી પહોંચે છે. સંસારમાં આજે જેટલા પણ જ્ઞાન - વિજ્ઞાન છે એમનું મૂળ વેદ જ છે.

સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિઃ- સૃષ્ટિની સ્થિતિના વિષયમાં વૈદિક મત સિવાયના મતોમાં ઉટ-પટાંગ વાતો જોવા મળે છે. જેવી કે - આ પૃથિવી બળદના માથા પર ટકેલી છે વિગેરે. મહર્ષિ દયાનન્દ વેદેતર આવા બધા મતોનું ખંડન કરીને વેદના આધારે કહે છે કે આ સમસ્ત બ્રહ્માંડ ઈશ્વરના આધારે ટકેલું છે. જવી રીતે કોઈ માણસ ઘડિયાળમાં ચાવી ભરે તો એ ઘડિયાળ ચોક્કસ સમય સુધી બરાબર ચાલ્યા કરે છે, એવી જ રીતે ઈશ્વરે સમસ્ત બ્રહ્માંડને ગુરુત્વાકર્ષણ જેવા નિયમોમાં બાંધ્યું છે. આજ સત્ય નિયમોના આધારે આ સૃષ્ટિનું ચક્ર ચાલ્યા કરે છે. વેદમાં કહ્યું છે 'સ્કમ્ભો દાધાર દ્યાવા પૃથિવી'. (અથર્વ. ૧૦-૨-૩૫) સર્વાધાર ઈશ્વરે દ્યુલોક અને પૃથિવી આ બંનેને ધારણ કર્યા છે. એણે મોટા અન્તરિક્ષને પણ ધારણ કરેલું છે. એણે વિસ્તૃત છ દિશાઓને ધારણ કરેલી છે. આ બધા ભુવનોમાં એ વ્યાપક છે.

સૃષ્ટિની આયુઃ- સૃષ્ટિની આયુ ચાર અબજ બત્રીસ કરોડ વર્ષની છે. વર્તમાન સૃષ્ટિ ત્રિવિષ્ટિપ (તિબેટ)માં થઈ હતી જે એ સમયે આર્યાવર્ત (ભારત) નો ભૂભાગ હતો. અહીંથી જ આર્યો સમસ્ત ભૂમંડળમાં ફેલાઈ ગયા. ભાષા વૈજ્ઞાનિકોએ પોતાના સંશોધનના આધારે એ સિદ્ધ કર્યું છે કે દેવભાષા સંસ્કૃત સંસારની બધી ભાષાઓની જનની છે. વર્તમાન સૃષ્ટિની રચનાને એક અબજ સત્તાણું કરોડ ઓગણચાલીસ લાખ, ઓગણપચાસ હજાર અને એકસો બાર વર્ષ થયા છે.

સૃષ્ટિનો અન્તઃ- પ્રલય સૃષ્ટિનો અન્ત અથવા પૂર્ણતા છે. પ્રલયાવસ્થાની આયુ પણ ચાર અબજ બત્રીસ કરોડ વર્ષ જ છે. સૃષ્ટિ રચના તથા પ્રલય ક્રમથી આવ્યા કરે છે. જેવી રીતે દિવસ પછી રાત અને રાત પછી દિવસ. સૃષ્ટિનો અન્ત વિલોમ ક્રમથી થાય છે. શરીરાદિ સમસ્ત પદાર્થ પૃથિવીમાં લીન થઈ જાય છે, પૃથિવી જળમાં, જળ અગ્નિમાં, અગ્નિ વાયુમાં, વાયુ આકાશમાં તથા આકાશ પ્રકૃતિના પરમાણુઓ સત્ત્વ, રજસ અને તમસમાં વિલીન થઈને પ્રકૃતિના પરમાણુ પોતાની સામ્યાવસ્થામાં આવી જાય છે.

પ્રલયમાં જીવાત્માઓ ગહન મૂર્ચ્છાની સ્થિતિમાં રહે છે. એમને સમય તથા સ્વયંની સ્થિતિનું કોઈ જ ભાન નથી રહેતું. મુક્ત જીવાત્માઓ એકત્રીસ નીલ, દસ ખરબ, ચાલીસ અબજ વર્ષ સુધી સ્વશક્તિથી પરમપિતા પરમાત્માના પરમાનન્દનો ભોગ કરે છે.

ઇત્યોમ્

सुभाषित

जो मनुष्य धर्म से अर्थात ईमानदारी से धन कमाता है। उस धन को अपना धन माने किन्तु अन्याय से अर्थात् झूठ बोलकर धोखा देकर, मिलावट करके, कम तोलकर रिश्वत लेकर, रिश्वत देकर अपनों को धोखा देकर धन कमाता है। उसको अपना धन नहीं मानें। अन्याय से कमाया हुआ धन तो मनुष्य को पापी बनाएगा ही और दुख भी देगा।

- स्वामी दयानन्द

समाचार दर्पण

ऋषि बोधोत्सव आयोजन की तैयारी प्रारम्भ

घंटा घर के मरम्मर का कार्य प्रगति पर

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषि बोधोत्सव दिनांक 26, 27, 28 फरवरी 2014 को आयोजित हो रहा है जिसमें विश्वभर के ऋषि भक्त सम्मलित होते हैं। टंकारा ट्रस्ट का यह प्रयास रहता है कि प्रत्येक वर्ष कुछ ना कुछ नया अवश्य प्रगति के रूप में किया जाए। क्योंकि जन्म भूमि को दर्शनीय बनाने हेतु कुछ नये प्रयास किए जाते हैं और कुछ पुराने प्रयासों/निर्माण कार्यों की मरम्मत एवं रख रखाव भी किया जाता है।

ऋषि भक्तों की सुविधा हेतु बनाया जा रहा पक्का रास्ता

इसी संदर्भ में टंकारा जन्मभूमि परिसर में स्थित घंटा घर की पुनः मरम्मत 10 वर्ष उपरान्त की जा रही है। उसमें चारों तरफ की घड़िया एवम् स्तम्भ मिम्बर की मरम्मत एवम् रंगाई का कार्य प्रगति पर है। इसी के साथ भोजनालय के साथ बने स्टोर को तोड़कर वहां पर ऋषि भक्तों के लिए खुला स्थान उपलब्ध कराया जा रहा है क्योंकि अधिक भीड़ के कारण स्थानाभाव हो जाता था। इस जगह के आस-पास के स्थल को भी कंक्रीट से पक्का किया जा रहा है। ऋषि भक्तों की सुविधा के लिए जहां-जहां से उनको कच्चे रास्ते से गुजरना पड़ता था वहां आधुनिक टाईलें लगाकर सुन्दर एवम् सुविधाजनक बनाया जा रहा है।

टंकारा आने पर मुख्य राजमार्ग से दयानन्द द्वार से जब हम जन्मस्थान के लिए मुड़ते है तो डेमी नदी के किनारे वाले द्वार पर एक भव्य छोटे द्वार

टंकारा परिसर के द्वार पर छोटा आकर्षक द्वार का कार्य प्रगति पर

का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इस द्वार के ऊपर बिजली से स्वाचालित रंगीन शब्दों में ऋषि जन्मभूमि लिखा होगा। द्वार से प्रवेश करते ही कंक्रीट की जो पक्की सड़क थी उसके दोनों ओर 3-4 फुट का कच्चा स्थान था जिसे इस वर्ष पूर्ण रूप से कंक्रीट से भरने का काम प्रगति पर है। प्रवेश द्वार पर फैलाई गई गन्दगी को चिरकालीन व्यवस्था से साफ करने का भी कार्य प्रगति पर है।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

आर्यवीर दल गुजरात

शीतकालीन वार्षिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

नई पीढ़ी के निर्माण में कार्यरत आर्यवीर दल, गुजरात प्रतिवर्ष प्रान्तीय स्तर के शिविरों का आयोजन करता हैं। इस वर्ष का शीतकालीन शिविर आयोजित किया गया। आर्यसमाज गांधीनगर में आयोजित हुए इस शिविर के आवास व भोजन की जिम्मेदारी आर्यसमाज कांकरिया, अहमदाबाद ने उठाई। इस शिविर में आर्यवीर व शाखा नायक श्रेणी का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर में गुजरात के विभिन्न स्थानों से आये हुए 142 आर्यवीरों ने भाग लिया। शिविरार्थियों की अनुशासित दिनचर्या सुबह 4.30 से रात्रि 9.30 तक चली। जिसमें शारीरिक, बौद्धिक व चारित्रिक प्रशिक्षण दिया गया। शारीरिक प्रशिक्षक सोमेन्द्र शास्त्री व सुवास शास्त्री के नेतृत्व में अन्य प्रशिक्षक सहायक के रूप में रहे। जिन्होंने सार्वदेशिक आर्यवीर दल का निर्धारित पाठयक्रम चलाया। बौद्धिक प्रशिक्षण में स्वामी शान्तानन्द सरस्वती (गुरुकुल भवानीपर-कच्छ) व हंसमुख परमार (टंकारा) ने सेवा प्रदान की। जिन्होंने आर्यवीरों को आर्यवीर दल का परिचय, उद्देश्य, आर्यवीर दल का ध्वज, आदर्श आर्यवीर, चरित्र निर्माण, देशभक्ति, स्वास्थ्य रक्षा, आर्यसमाज, वैदिक धर्म के मूल सिद्धान्त आदि के बारे में जानकारी दी।

शिविर का समापन कार्यक्रम श्री समशेर सिंह (आई.पी.एस.) डिप्टी डायरेक्टर एन्टी करप्शन ब्यूरो गुजरात राज्य मुख्य अतिथि की उपस्थिति में हुआ। अतिथि विशेष रहे श्री छबीलभाई (विधायक, कच्छ) व सु श्री दमयंतीबहन बारोट (डेप्युटी कलेक्टर-हिंमतनगर)। श्री समशेर सिंह जी ने आर्यवीरों को संबोधित करते हुए कहा कि सत्य की राह पर चलना सबसे कठिन है। परन्तु उस राह पर चलने से निर्भयता आती है। उन्होंने कहा कि धर्म वह है कि जो सत्य की ओर ले जाए। उन्होंने आर्यवीरों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि वह सत्य की राह पर चलने का व्रत लें। आर्यसमाज का मार्ग वेद का मार्ग है और वेद सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। उन्होंने आर्यवीरों को आधुनिक तकनिकी ज्ञान प्राप्त कर उसका सदुपयोग करने की सलाह दी। विशेष अतिथि श्री छबीलभाई ने अपने वक्तव्य में कहा कि आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानन्द है, परन्तु आज आर्यसमाज व दयानन्द को भुलाया जा रहा है। स्वामी विवेकानन्द की तुलना में स्वामी दयानन्द कई गुना अधिक सम्मान के अधिकारी हैं। अन्य अतिथि सुश्री दमयन्तीबहन बारोट ने भी आर्यवीरों की बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करते हुए जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। इस समापन समारोह में गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल ने सभी मेहमानों का स्वागत किया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी शान्तानन्द सरस्वती ने की। शिविरार्थियों को मेडल, पुस्तकें व प्रमाणपत्र महानुभावों के हाथों वितरित किया गया। शिविर का संचालन हंसमुख परमार ने किया।

ऋषि जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) चलो

इस अवसर पर ऋषि भक्तो को धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्वतीय स्थानों की यात्रा कराई जायेगी।

(24 फरवरी से 6 मार्च 2014 तक)

दर्शनीय स्थानः अजमेर, पुष्करराज, ब्यावर, माउन्टआबु, उदयपुर, जयपुर, चित्तौडगढ़ तथा हल्दी घाटी, टंकारा, द्वारिका, बेट द्वारिका, पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, राजकोट, अक्षरधाम मन्दिर, वृन्दावन तथा मथुरा आदि।

किराया बस प्रति सवारी : रुपये 3500/-

कार्यक्रम

प्रस्थानः- ❒ 24.2.2014 सायं 4.00 बजे आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय गुड़गांव से ब्यावर ❒ 25.2.2014 प्रातः 6.00 बजे ब्यावर से माऊन्ट आबू, रात्रि माऊन्ट आबू। ❒ 26.2.2014 प्रातः 6 बजे माऊन्ट आबू से चलकर सायं 3.00 बजे टंकारा।

26 व 27 फरवरी टंकारा में

❒ 28.02.2014 प्रातः 5 बजे टंकारा से चलकर द्वारिका, बेट द्वारिका रात्रि पोरबन्दर। ❒ 01.3.2014 प्रातः 11.00 पोरबन्दर से सोमनाथ मन्दिर, रात्रि राजकोट। ❒ 02.03.2014 प्रातः 6.00 बजे राजकोट से गांधीनगर, अक्षरधाम देखकर रात्रि उदयपुर। ❒ 03.03.2014 दोपहर 12 बजे उदयपुर से हल्दीघाटी-रात्रि चितौड़गढ़। ❒ 04.03.2014 प्रातः 8 बजे चितौड़गढ़ से रात्रि अजमेर, पुष्कराज। ❒ 05.03.2014 प्रातः 9.00 बजे अजमेर से चलकर रात्रि जयपुर। ❒ 06.03.2014 प्रातः 7 बजे जयपुर से चलकर मथुरा एवं वृन्दावन देखकर सायं गुड़गांव।

इच्छुक महानुभाव सीटें बुक कराने तथा कार्यक्रम के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

यात्रा प्रबन्धक **मा. सोमनाथ,** 363-364, प्रताप नगर, गुड़गांव, मो. 09811762364, फोन : 0124-2304873, 08800115646

DAV News

Business Plan Winners-British Council Award

Veda Vyasa DAV Public School, Vikaspuri, New Delhi was awarded a certificate by the British Council for being selected as one of the Business Plan Winners for the school Enterprise Challenge. This enterprise aims at promoting the planet and people. The students were given hands on experience in handling, planning and execution of the enterprise. The special children exhibited Enterprise, Excellence in Innovation, and Produced Eco-friendly cost effective products like Candles, Dusters Jute bags, Purses etc. The basic premise was to enable budding entrepreneurs to get actively involved in market strategy which involved social as well as Commercial aspects. The students used Social sites like Twitter, Face Book, Blogs to Publicize their products. The Sale of product faciitated their Communication skills, Calculation Co-ordination, Sense of Co-operation, Entrepreneur traits etc. The Green Salad Garden was the highlight of the innovation showcased by special children. The Principal of the School Mrs. Chitra Nakra was awarded a Certificate and a gift voucher of Rs. 15,000/- for purchasing books. She was feliciated at a specially organized ceremony held at Kolkata.

डी.ए.वी. कोटा द्वारा व्याख्यान आयोजित

महर्षि दयानन्द सामाजिक सुधारों के अग्रदूत थे। उन्होनें समाज से अंधविश्वास, पाखण्ड दूर किया। यह बात वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र ने डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गढ़ेपान कोटा में आयोजित 'हमारे प्रेरणा स्रोत स्वामी दयानन्द' विषय पर आयोजित व्याख्यान में कही। स्वामी दयानन्द ने सर्वप्रथम समाज में फैली कुरीतियों, बुराइयों व पाखण्डों को दूर करने का कार्य किया इसलिए वे हमारे प्रेरणा स्रोत हैं। सत्य के प्रकाश के लिए स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' अमर ग्रन्थ लिखा। आर्य समाज के छठे नियम को संसार के उपकार से जोड़ा गया है। इसलिए जिला सभा के द्वारा समाज सेवा के अनेक कार्य किए जाते हैं। कार्यक्रम के जिला आर्य सभा कोटा द्वारा डी.ए.वी. स्कूल की प्राचार्या महोदय को स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर आधारित फिल्म की हिन्दी और अंग्रेजी की डी.वी.डी भेंट की गयी।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज गाँधीधाम (कच्छ-गुजरात) का वार्षिकोत्सव बड़े हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः नन्दिता जी चतुर्वेदी (पाणिनि कन्या गुरुकुल-वाराणसी) के आचार्यत्व में हुआ जिसमें 121 यजमानों ने यज्ञलाभ लिया।

ध्वजारोहण श्री कमलेशकुमार अग्निहोत्री जी के द्वारा हुआ। समारोह में विविधि सामाजिक विषयों पर सम्मेलन आयोजित हुए-समारोह में उपस्थित विद्वानों ने अपने मंतव्य रखे। पं. कमलेशकुमार अग्निहोत्री जी (अहमदाबाद), आचार्या नन्दिताजी (वाराणसी), स्वामी श्रद्धानन्दजी (पलवल-हरियाणा), स्वामी शांतानन्दजी (कच्छ), पं. दयारामजी (बदायूँ) ने अपनी ओजस्वी वाणी से सारगर्भित विचार प्रस्तुत कर सभी को लाभान्वित किया। साध्वी उत्तमायतिजी (दिल्ली) व साध्वी आत्मदीक्षिताजी (इन्दौर) ने ईशभक्ति के सुमधुर भावपूर्ण भजनों से सभी को भावविभोर कर दिया। जीवनप्रभात (निराधार बालकों का आश्रयस्थान) के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसमें देशभक्ति के गीत, विविध प्रेरणात्मक प्रसंग, स्वरक्षा हेतु कराटे के विविध दाव, भारतीय संस्कृति की महत्ता दर्शाते प्रसंग इत्यादि मुख्य रहे। महामन्त्री श्री वाचोनिधि आचार्य ने आर्यसमाज गांधीधाम द्वारा किए जा रहे विविध प्रकल्पों की विस्तृत जानकारी दी।

❑❑❑

आर्य समाज अशोक विहार फेस-1, दिल्ली का 41वां वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक तक मनाया गया। जिसमें श्रीमद्भगवद गीता पर सुमधुर कथा एवं यज्ञ डा. जयेन्द्र कुमार जी (नोएडा) के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। सुमधुर भजन महाशय सहदेव जी "बेधड़क" बागपत के थे। "वैदिक प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन श्री विजय भूषण जी आर्य एवं डा. सुषमा आर्या जी के संयोजकत्व में विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों के छात्र-छात्राओं द्वारा किया गया।

❑❑❑

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास व धूमधाम से मनाया गया। इस महोत्सव में आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) से पधारे जिन्होंने तीनों दिन सुन्दर, मन्त्र मुग्ध कर देने वाले विचार दिये।

स्थापना दिवस समारोह

आर्य समाज हौज खास की स्थापना के 37 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में एक भजन संध्या का आयोजन रविवार दिनांक 24 नवम्बर 2013 सायं 4.00 बजे किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के सभी नेतागण के पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य अतिथि स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल गौतम नगर थे। इस अवसर पर प्रो किरण वालिया, बाल विकास मन्त्री, दिल्ली सरकार, श्रीमती आरती मेहरा, भूतपूर्व मेयर दिल्ली, श्रीमती अंकिता सैनी, निगम पार्षद ने भी पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर को प्रदेश में वैदिक प्रचार/प्रसार के लिए एक स्थिर ब्रह्मचारी/प्रचारक व एक भजनोपदेशक की आवश्यकता है। उचित वेतन व रहने की व्यवस्था सभा की तरफ से होगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाएगी। प्रार्थी अपना विवरण सभा के वर्तमान कार्यालय पते पर भेजने के पश्चात् प्रधान/मन्त्री जी से सम्पर्क करें।

(पृष्ठ 8 का शेष)

आयतन निश्चित न होने के कारण इसे आकार रहित कहा जाता है। जीवात्मा मनुष्य जन्म में वेदों का ज्ञान प्राप्त कर एवं उसके अनुसार आचरण कर, योगाभ्यास से ईश्वर का साक्षात्कार करके व उसके पश्चात जीवन-मुक्ति का जीवन व्यतीत कर यथासमय देह त्याग के बाद मोक्ष को प्राप्त होता है। **मोक्ष का अर्थ जन्म-मरण के दु:खों से पूर्णत: निवृत्ति एवं 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षो तक ईश्वर के सान्निध्य में सुख व आनन्दपूर्वक रहकर पुन: मनुष्य योनि में उत्पन्न होना।** यदि मनुष्य योनि में वेदानुसार जीवन व्यतीत न कर वेदविरूद्ध असत्य व अज्ञान पूर्ण आचरण कोई करता है तो आगामी जीवन में वह पशु, पक्षी, कीट, पतंग, जलचर आदि निम्न जीव-योनियों में पुनर्जन्म पाता है जहां उसे दु:ख भोगने पड़ते हैं। यह पाप करने वा वेद को न जानने के कारण, जानने का प्रयत्न न करने व मत-मतान्तरों में फंस जाने के कारणों से प्राय: होने की सम्भावना होती है। इसके विपरीत वेदानुसार जीवन व्यतीत करने पर जीवन की उन्नति होती है और परजन्म में श्रेष्ठ योनि व उसमें सुखों की प्राप्ति होती है।

एक प्रश्न यह भी हो सकता है कि जीव अर्थात् हम जन्म से पूर्व कहां थे व मृत्यु के बाद कहां जायेगें? इसका उत्तर है कि जन्म से पूर्व हम मनुष्य योनि वा किन्हीं निम्न योनियों में थे। पूर्व जन्म की मृत्यु पर हमारे पाप पुण्य बराबर हो गये या पुण्य पाप से अधिक हो गये जिस कारण ईश्वर ने अपने विधान के अनुसार हमें मनुष्य जन्म दिया है। इसी प्रकार इस जन्म के बाद हमारे कर्मो का खाता जैसा होगा, उसी के अनुरूप अगला जन्म मिलेगा। यदि पाप अधिक होगें तो निम्न योनियों में जाना होगा और यदि पुण्य अधिक होगें तो हमें मनुष्य योनि मिलेगी और हमारे नये माता-पिता व परिस्थितियां हमारे कर्मों के अनुरूप होगें। आत्मा व परमात्मा का सम्बन्ध क्या है, यह जिज्ञासा भी हो सकती है। वेदानुसार इसका उत्तर यह है कि ईश्वर हमारी माता है, पिता है, आचार्य, राजा है, न्यायाधीश, मित्र व सखा आदि है। अन्य अनेक सम्बन्ध भी इसी प्रकार के हैं। यहां यह मुख्य है कि अनन्त काल से हम व ईश्वर एक साथ हैं व आगे अनन्त काल तक साथ में रहेगें, ईश्वर हमारा सनातन साथी है, वह हमारा साथ कभी नहीं छोड़ता न हमें भूलता है, हम ही मनुष्य व अन्य योनियों में उसे भुला देते हैं। पुंनर्जन्म का सिद्धान्त भी वेद व वैदिक साहित्य की एक सत्य मान्यता व परम्परा है। वैदिक धर्मी, सनातन धर्मी व कुछ अन्य मत तो इस सिद्धान्त को मानते हैं परन्तु बहुत से मत-मतान्तर इसे नहीं मानते। जो नहीं मानते उनकी सत्य को जानने में रूचि भी नहीं है। **कइयों का मत तो उन्हें जिज्ञासा करने की अनुमति ही प्रदान नही करता।** यह एक विडम्बना है। यदि जिज्ञाया या शंका करेगें तो सत्य जानकर मत परिवर्तन की स्थिति की सम्भावना पैदा हो सकती है जिससे बचने के लिए भी स्वमतनिरीक्षण, परीक्षण, पुनरावलोकन, शंका-समाधान आदि से दूर रहते हैं। अभी कितने समय तक दूर रहेगें कहा नहीं जा सकता? सत्य को एक न एक दिन तो अवश्य स्वीकार करना ही होगा। **''देर आयद दुरूस्त आयद''** की कहावत के अनुसार उन्हें शीघ्र विचार, चिन्तन व वेद के विद्वानों से अपनी शंकाओं का समाधान कर अपने जीवन को लाभान्वित करना चाहिये और हानि से बचना चाहिये। मुक्ति व मोक्ष का सिद्धान्त भी सत्य सिद्धान्त है जो तर्क आदि प्रमाणों से सिद्ध है। **जो बंधा है वह पहले मुक्त या स्वतन्त्र था। जो स्वतन्त्र है वही बन्धन में आता है।** हम देखते हैं कि जितनी भी जीव योनियां हैं, वह सभी कर्मो के बन्धन के कारण हैं, **बन्धन में आने से पहले उनकी जीवात्मायें अवश्य ही इससे मुक्त रहीं होगीं।** अब बन्धन में हैं तो बन्धन काटने का उपाय करने पर अवश्य सफलता मिलेगी अर्थात् मुक्ति व मोक्ष की प्राप्ति होगी। मुक्ति के बारे में यह भी जानना है कि मुक्ति निश्चित अवधि के लिए होती है। इसमें जीव का ईश्वर में लय या विलय नहीं होता। जीव का अस्तित्व पूर्ववत् रहता है। जीव की सत्ता अनादि, अनन्त व अविनाशी है और नित्य तथा सनातन है। यदि जीव का ईश्वर में लय होता तो फिर अब तक सारा ब्रह्माण्ड जीव-रहित हो जाता जिसका कारण है कि अनन्त काल से चला आ रहा जीव अनेकों बार मुक्ति प्राप्त कर चुका है और अनन्त बार ही इसका जन्म व मरण हो चुका है। आगे भी इसकी अनन्त बार जन्म व मृत्यु होगीं व अनन्त बार फिर मुक्ति होगी। इसका कारण यह सिद्धान्त भी है कि सीमित कर्मों का फल सीमित होने, असीमित न होने, से मुक्ति का काल नियत होना अवश्यम्भावी है। यह ज्ञान केवल वैदिक धर्म में ही उपलब्ध है, अन्यत्र तो खाओं, पियो व खुश रहो का सिद्धान्त है या फिर मत विशेष पर विश्वास करने से पापों के क्षमा होने का अयुक्तिपूर्वक सिद्धान्त है जो असत्य व अविवेकपूर्ण है।

यह सब ज्ञान हो जाने पर हमारा कर्तव्य बनता है कि हम मनुष्य जीवन में मत-पन्थ-सम्प्रदाय से ऊपर उठकर वेद ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास करें। वेद ज्ञान को प्राप्त करने का सरलतम उपाय महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन है। यह ग्रन्थ हिन्दी, अंग्रेजी सहित अनेक भारतीय व विश्व की भाषाओं में उपलब्ध है। इससे कम परिश्रम से व सरलता से प्राय: सभी वैदिक सिद्धान्तों का युक्ति व प्रमाण सिद्ध ज्ञान मिल जाता है। इसके बाद आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका व संस्कार विधि आदि ग्रन्थों को पढ़कर जीवन का उद्देश्य, लक्ष्य, लक्ष्य प्राप्ति के साधन व उपाय, सत्य-वैदिक जीवन पद्धति का ज्ञान हो जाता है और मनुष्य मुक्ति व मोक्ष के निकट पहुंच सकता है वा प्राप्त भी कर सकता है। सारा संसार महर्षि दयानन्द का ऋणी है और रहेगा जिन्होंने जीवन की सफलता का विधान बहुत ही सरल शब्दों में लिखकर हमें प्रदान किया है। उसको हम माने या न माने, लाभ व हानि हमारी ही होगी अन्य किसी की नहीं। इन ग्रन्थों के स्वाध्याय से दैवीय सत्य स्वत: आत्मा में प्रकट हो जाता है। वेद, सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय, अध्ययन, उनको समझ कर उसका पालन करना ही हमारा धर्म है और इसी से हमारा इस जन्म में व परजन्म में कल्याण निश्चित है। आईये, वेदों व सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों के स्वाध्याय का व्रत लें और अपना जीवन सफल करें। -196, चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001 (भारत)

मौन योग साधना

आपको यह शुभ-समाचार देते हुए हर्ष हो रहा है कि दर्शनयोग महाविद्यालय के आचार्य सुमेरूप्रसाद जी दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य जो कि पिछले डेढ़ वर्षो से अज्ञात स्थान में मौन में रहते हुए पूज्य गुरुजी स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा त्रैमासिक योग शिविर में प्रदत्त किए जा चुके ज्ञान का अनुसरण करते हुए योग साधना कर उसे अपने जीवन में उतारने को प्रयत्नशील थे, अपनी तपस्या पूरी करके 4 जनवरी 2014 को वापस आ गए हैं। इस प्रकार आगे से उनका लाभ, उनका मार्गदर्शन, विद्यालय को और श्रद्धालु धर्म प्रेमी आर्य जनों को मिलता रहेगा। वर्तमान में संसार में ऐसे व्यक्ति बहुत कम दिखते हैं, जो इस प्रकार से लंबा मौन रखें, गहन तपस्या से साधना करें। इस विद्या से व्यक्ति और समाज का जितना उपकार होता है, उतना और किसी विद्या से नहीं होता है। दर्शन योग महाविद्यालय परिसर में अपनी अनुकूलता से रूककर आप इस विवेक ज्ञान को प्राप्त कर सुखी, जीवन का निर्माण करने का प्रयास कर सकते हैं। **- स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक**

(पृष्ठ 1 का शेष)

उन्नसवीं सदी के भारतीय पुनजागरण के काल का जब हम अध्ययन करते हैं तो युगदुष्टा के रूप में महर्षि स्वामी दयानन्द का नाम आता है। क्रान्ति को उद्घोष लेकर कार्यक्षेत्र में उतरे और उतरकर समाज में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक आदि सभी क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया। आर्यसमाज के इस यशस्वी संस्थापक क्रान्तिदूत दयानन्द के सम्बन्ध में योगिराज अरविन्द ने कहा है कि यदि संसार के महापुरुषों को पर्वत की चोरियां माना जाये तो दयानन्द सबसे ऊँची चोटी है। श्री अरविन्द ने महर्षि दयानन्द को भारत के पुनरूद्धारकों में अनुपम तथा निराले ढंग का कार्यशील महापुरुष कहा है। कविवर दिनकर ने भी कहा है कि ''दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक मात्र थे किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये थे, उन्होंने अपार ब्रह्मचर्य बल, अगाध विद्वता, अत्यन्त निर्भीकता और अलौकिक साहस से विश्वभर की आसुरी शक्तियों और प्रवृत्तियों को एक चुनौती दे डाली थी और संसार में व्याप्त अज्ञान अन्धकार, मूलक अन्धविश्वासों, कुप्रथाओं, कुरीतियां, रूढ़ियों तथा पाखण्डों से संघर्ष करते करते अपने प्राणों तक आहुत कर दिया। केवल इतने ही नहीं 1857 की महाक्रान्ति के पश्चात् जब कि भारत में स्वतन्त्रता और स्वराज्य का नाम लेना ही अपनी मृत्यु का निमन्त्रण समझा जाता था, जब कि विदेशी, अंग्रेज शासन ''लार्डमैकाले'' योजना के अनुसार अपनी शिक्षा समस्याओं द्वारा यहां तक भाषा धर्म संस्कृति साहित्य वा इतिहास को समाप्त कर यहां पर राष्ट्र को ईसाई बनाने का भरसक परिश्रम कर रहा था, जब कि विदेशी विद्वान आर्यजाति के मूल धर्मग्रन्थ वेद को असभ्य गडरियों के गीत तथा रामायण महाभारत के काल्पनिक गाथाएं सिद्ध कर रहे, जबकि पादरी था मौलवी (मुलता) इस हिन्दू धर्म देवी और महापुरुषों की मजाक उड़ाकर आर्य जाति के स्वाभिमान एवं समाज को नष्ट कर रहे थे और हजारों नर नारियों को अपने धैर्य में विलीन कर रहे थे। ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानन्द जी ने इस को उद्धार करने की प्रतिज्ञा ली और बम्बई के अन्दर 1875 में वैदिक धर्म प्रचार हेतु आर्य समाज की स्थापना की। राष्ट्रीय चेतना की जागरित करने की दृष्टि से दयानन्द ने क्रान्ति का नारा दिया और धार्मिक सामाजिक क्षेत्र में एक ऐसी नवीन क्रान्ति को जन्म दिया जिसका फलस्वरूप सम्पूर्ण भारत में खल बला या हलचल मच गया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के उद्धार और अपने देश को नैतिक और सामाजिक क्षेत्र को ऊँचा उठाने के लिए जो मूल्यवान योग दिया उसको संक्षेप में बोलना सम्भव नहीं है। उन्होंने जन्मगत जात-यात का खण्डन करके जो उपलब्धि प्राप्त की, वह हमें विश्वास है कि भारत की उन्नति के लिए राजमार्ग सिद्ध होगी। मॉर्डन रिव्यु ने श्री रामानन्द चटरजि को अपने पत्र पर लिखा था कि, दयानन्द सरस्वती जी ने सामाजिक धार्मिक को एक सूत्र में बांधना चाहते थे और भारत को एक राष्ट्र के रूप देने के लिए भी उन्होंने भारत को विदेशी शासन से मुक्त करना चाहते थे। साथ-साथ सामाजिक दृष्टि से भी देशवासियों को एक कराने के लिए परस्पर भेद को मिटाने चाहते थे। केवल इतना ही नहीं भारत की भाषा, धर्म, संस्कृति, साहित्य, इतिहास देश भक्ति आदि को समाप्त करने की दृष्टि से बनाई लर्डमैकाले की शिक्षा योजना को विफल कर देश के छात्र छात्रायें को अपनी भाषा, धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा एवं स्वाभिमान भरने के लिए महर्षि की योजना के अनुसार आर्य तथा आर्य सामाजियों ने उत्तर भारत के लगभग सभी प्रान्तों में गुरुकुलों, कॉलेजों की स्थापना की। प्रमाणस्वरूप जब राष्ट्रतिपा, महात्मागांधी जी दक्षिण अफ्रिका में वहां की गौरी सरकार की रंग भेद नीति वर सत्याग्रह कर रहे थे तो गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थियों ने अपने नित्य का दूध, घी तयाग कर और सिरपर कफन बांधकर मजदुरों करके धन जमा किया। इस काम पर प्रभावित होकर गांधी जी सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी गये और देशभक्त बच्चों को आशीर्वाद दिया। जब गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस का स्वतन्त्र आन्दोलन चला तो आर्य समाज ने अनुभव किया कि उनके द्वारा किया गया। राजनैतिक क्षेत्र में महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार किया जा सकता है। इन समुचे बातों का आधार शिल, स्वामी दयानन्द के कार्यो से यह प्रेरणा मिलती है कि उन्होंने हमारे देश के लिए जो कार्य किया था उस कार्य को पूर्ण करने के लिए हम दृढ़ संकल्प लें तथा उनके बताये हुए मार्ग पर चलें। हम नई शताब्दी की प्रथम शिवरात्रि शिवरात्रि बन जाए। हमें भी वास्तविक बोध हो ताकि हम अपने बहुमूल्य मानव जीवन को सार्थक कर सकें।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी सम्मानित

अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को आर्यसमाज महावीर नगर, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित भव्य सत्संग समारोह में **'वेद वेदांग गौरव सम्मान'** से विभूषित किया गया।

समारोह के अध्यक्ष श्री ओ.पी. बब्बर जी (विधायक) मुख्य अतिथि श्री यशपाल आर्य जी (चेयरमैन एवं निगम पार्षद) श्री राजीव बब्बर जी (प्रवक्ता-भाजपा, दिल्ली प्रदेश) समाज प्रधान श्री राजपाल पुल्यानी जी ने आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को शाल एवं सम्मान राशि देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विराट जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि मनुष्य की सफलता का रहस्य उसके रंग रूप गोरे या काले होने में नहीं, आन्तरिक गुणों में निहित है। प्रख्यात लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा लिखित महर्षि दयानन्द की सार्वभौम मान्यताएं नामक पुस्तिका का निःशुल्क वितरण किया गया।

डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में जागरूकता वक्तत्व

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 28 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2013 तक साउथ अफ्रीका के डरबन महानगर में आयोजित हुआ जिसमें 1 दिसम्बर को कार्यक्रम का एक सत्र चिकित्सा विषय पर आधारित था। चिकित्सा सत्र में भारत से कोटा राजस्थान के प्रतिनिधि श्री अर्जुनदेव चड्ढा को वक्तव्य के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रामविलास ने अर्जुनदेव चड्ढा का परिचय दिया। आचार्य बलदेव (स्वामी रामदेव के गुरु), स्वामी धर्मानन्द उड़ीसा, डॉ. स्वामी देवव्रत, स्वामी आर्यवेश, ब्रह्मचारी राजसिंह, विनय आर्य, वाचोनिधि आर्य, धर्मपाल आर्य, प्रकाश आर्य, दयानन्द शर्मा (जोहन्सबर्ग) कार्यक्रम के संचालक डॉ. राम विलास व कई देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। इस अवसर पर डरबन के उपनगर फीनिक्स में शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

डी.ए.वी. जयपुर द्वारा
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का भव्य आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल वैशाली नगर, जयपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। यह कार्यक्रम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा व आर्य युवा समाज, राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम की पूर्व संध्या अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. वागीश कुमार आचार्य जी द्वारा 'आओ, श्रद्धा के साथ आनन्द की ओर चले! विषय पर मार्मिक प्रवचन हुआ।

विद्यालय का सभागार जिज्ञासु व सुधी-श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था, जयपुर के आर्य सभासद, अभिभावकजनों के साथ-साथ लोकायुक्त राजस्थान सरकार सहित अनेक आई.एस.एस, आई.पी.एस. व आर.ए.एस. अधिकारियों की उपस्थिति थी। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय प्रधान सर्वश्री पूनम जी ने वैदिक मन्त्रोच्चारण के मध्य दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। मंगलाचरण के रूप में स्थानीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने प्रभु-भक्ति के गीत 'ओ३म् बोल मेरी रसना घड़ी-घड़ी'' पर नृत्य प्रस्तुत किया, जिसने उपस्थित जनसमूह को भाव-विभारे कर दिया।

डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, जयपुर के उन सभी मेधावी छात्र-छात्राओं सूरी जी के कम-कमलों द्वारा सम्मानित किया गया, जिन्होंने विगत सत्र में शैक्षिणिक गतिविधियों में उल्लेखीय प्रदर्शन द्वारा विद्यालय का गौरव वर्धन किया। पूरे कार्यक्रम के दौरान राजस्थान की विभिन्न डी.ए.वी. संस्थाओं से पधारे संगीत शिक्षकों ने अपने ईश-भक्ति आधारित भजनों के माध्यम से सम्पूर्ण वातावरण को सुरम्य व भक्तिमय बनाए रखा।

22 दिसम्बर, रविवार को कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: सर्वेष्टि महायज्ञ के साथ हुआ, जिसमें श्रद्धेय श्री पूनम सूरी जी ने सपत्नीक मुख्य यजमान के रूप में आहुतियां प्रदान की तथा डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली से समागत अतिथिगण एवं क्षेत्रीय निदेशकगण, प्राचार्यवृन्द, शिक्षकगण, अभिभावकजन व भारी संख्या में आर्य जन सम्मिलित हुए। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. प्रमोद कुमार योगार्थी जी थे। शान्तिपाठ के रूप में यज्ञशेष ग्रहण किया।

सर्वेष्टि महायज्ञ के पश्चात् उपस्थित सभी जन मुख्य पाण्डाल में एकत्रित हुए। इस विशाल पाण्डाल में लगभग 2500 से भी अधिक श्रोतागण उपस्थित थे। डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल वैशाली नगर, जयपुर के छात्रों द्वारा वैदिक मन्त्राधारित नृत्य प्रस्तुत कर प्रभु का वन्दन किया। कार्यक्रम में अत्यन्त भावुकता का क्षण तब रहा, जब मुख्य अतिथि श्रीमान् पूनम सूरी जी ने कार्यक्रम की भव्यता से अभिभूत हो सम्मान का प्रतीक अपनी शॉल विद्यालय के प्राचार्य, श्री अशोक कुमार जी शर्मा को भेंट कर सम्मानित किया। इसके साथ ही ने डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर के प्रथम प्रविष्ट छात्र श्री भूदेव देवड़ा, प्रबन्ध निदेशक, रावत ग्रुप ऑफ होटल्स का अभिनन्दन किया। इस अवसर के लिए विशेष रूप से प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी मंचासीन अतिथिगण द्वारा किया गया।

श्री पूनम सूरी जी ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम के भव्य संयोजन की प्रशंसा की और कहा कि जीवन में पांच 'प्र' 1. प्रार्थना, 2. प्रतिज्ञा, 3. पुरुषार्थ, 4. प्रतीक्षा, 5. प्राप्ति का बहुत महत्व पूर्ण है, इनसे हम लक्ष्य प्राप्ति के शिखर तक पहुँच सकते हैं। तदुपरान्त सेवा प्रकल्प के अन्तर्गत समाज के उपेक्षित, नि:शक्त व असमर्थ जनों को माननीय प्रधान जी व श्रीमती मणि सूरी जी ने दैनिक उपयोग की वस्तुएं प्रदान कीं, जिनमें सिलाई मशीन, रजाई, कम्बल व शॉल सम्मिलित थे। स्थानीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने श्रद्धानन्द-जीवन झांकी-एक लघु नाटिका का मंचन किया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी दर्शकवृन्द ने नाटिका के सजीव मंचन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम के अन्त में श्रीमती के काकरिया, निदेशिका, पब्लिक स्कूल्स, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली ने कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं अन्य सभी सम्माननीय अतिथिजनों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में उपस्थित विशाल जन समूह ने समस्त आयोजन की मुक्त कण्ठ से भूरि-भूरि प्रशंसा की।

शान्तिपाठ के साथ भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ तथा सभी आगतुक अतिथियों ने मिलकर ऋषिलंगर में सर्वेष्टि महायज्ञ के प्रसाद को ग्रहण किया।

टंकारा ऋषि बोधोत्सव

दिनांक 26, 27, 28 फरवरी 2014 तक

27 फरवरी 2014 को होने वाले

मुख्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे।

श्री पूनम सूरी जी

(प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति)

टंकारा समाचार फरवरी, 2014
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-2-2014
R.N.I. No 68339/98

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते!

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 26, 27, 28 फरवरी 2014 (बुधवार, वीरवार, शुक्रवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 21 फरवरी 2014 से 27 फरवरी 2014 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर)/**श्री जगत वर्मा** (तलवाड़ा, पंजाब)

श्री अमर सिंह आर्य वाचस्पति (ब्यावर, राजस्थान)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री बृज मोहन लाल मुंजाल (प्रमुख हीरो ग्रुप इण्डस्ट्रीज)

मुख्य अतिथि : श्री पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)

बोधोत्सव

दिनांक 27-02-2014

अध्यक्षता: **श्री सुरेश चन्द अग्रवाल** (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात)

कार्यक्रम के सम्भावित आमन्त्रित विद्वान्

स्वामी सुधानन्द सरस्वती (उड़ीसा), **स्वामी आर्येशानन्द** (माउन्ट आबू), **प्रो. महावीर** (कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार), **डॉ. सोमदेव शास्त्री** (मुम्बई) **श्री कुंवरजी भाई बावलिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष, गौ सेवा सदन गुजरात), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (राज्यमन्त्री, गुजरात सरकार), **श्री कान्ति भाई अमरतिया** (विधायक मोरबी), **श्री एस.के. शर्मा** (मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा), **श्री वाघजी भाई वोडा** (अध्यक्ष कृषक भारती का.ओ. कम्पनी) **श्री विनोद शर्मा** (यू.एस.ए.), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए.), **श्री वाचोनिधि आर्य** (गांधीधाम) एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिये एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज ''अनारकली'' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 अथवा टंकारा, जिला राजकोट-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

श्री सत्यानन्द मुंजाल	**श्रीमती शिवराजवती आर्य**	**रामनाथ सहगल**
मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान	उपप्रधाना	मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय